तार्किक और व्यावहारिक ज्योतिष

लेखक

विपुल जोशी

(TARKIK EVM VYAWAHARIK JYOTISH BY VIPUL JOSHI) तार्किक एवं व्यावहारिक ज्योतिष

© 2022 विपुल जोशी

संपादक – अरविन्द कुमार साहू, दूरभाष (Whattsapp) – 7007190413 / 9838833434

सर्वाधिकार सुरक्षित © इस प्रकाशन का कोई भी भाग लेखक की अनुमति के बिना पुनः मुद्रित करना, प्रति निकालना, वितरण करना, रिकॉर्ड करना, फिल्मांकन अथवा किसी भी अन्य माध्यम द्वारा पुनः उपयोग करना निषिद्ध है!

प्रथम संस्कारण :2022

(वैधानिक सूचना- ये पुस्तक मेरे अर्जित ज्ञान, विश्वास और व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित है| इस पुस्तक में वर्णित सभी वास्तविक चरित्र, स्थान और घटनाओं के नाम गोपनीयता बनाये रखने के लिये परिवर्तित कर दिये गये हैं या काल्पनिक हैं | फिर भी इसके नाम, पात्र या घटनाओं का किसी भी जीवित या मृत व्यक्तियों या वास्तविक घटनाओं से संबंध निकलता है तो ये मात्र एक संयोग होगा|)

विषय सूची

ज्योतिष उपाय और दिनचर्या

ज्योतिष यात्रा

रत्नों का बाजार

ग्रुप इवेंट (सामूहिक कार्यक्रम) और ज्योतिष

क्या राहु के उपाय असम्भव हैं ?

ज्योतिष, कमजोर राहु और जीवन

ज्योतिष और जातक

बुधादित्य योग और ज्योतिष

ज्योतिष और अकाल मृत्यु (आत्महत्या)

ज्योतिष - मित्र और भाग्योदय

राहु, केतु और ज्योतिष

जातक को हैरान कैसे करें?

सामुद्रिक शास्त्र और फलादेश

ज्योतिष विज्ञान, ज्योतिषी कलाकार

इसको पढ़ने के बाद आप भी ज्योतिषी बन जायेंगे

ज्योतिष यात्रा

राजा, उनके नौ रत्न और ज्योतिष

ज्योतिष और रत्न

ज्योतिष और राज योग

ज्योतिषी ईश्वर के पोस्टमैन

ज्योतिष, विवाह और भौतिकवादी युग

कुंडली में राजयोग

ज्योतिष और योग का सम्बन्ध

सरकारी नौकरी और कुंडली

देश, काल तथा परिस्थिति

ज्योतिष और करियर

ज्योतिष और प्रेत बाधा, ऊपरी हवा आदि

ज्योतिष और उपाय

कालसर्प का बाजार

ज्योतिष, लॉक प्रोफाइल और राहु

कालसर्प योग के फायदे

नवमांश क्या है, क्यों उपयोगी है?

ज्योतिष जीवन और चन्द्रमा

कर्मयोग ज्योतिष और जीवन

ग्राफोलॉजी हस्ताक्षर विज्ञान

विवाह गुण मिलान और ज्योतिष

ज्योतिष और प्रीप्लांड बच्चे

ज्योतिषी अपना भाग्य क्यों नहीं बदलते?

महान लोगों की कुंडलियाँ और ज्योतिष

समय के साथ कितनी बदली है ज्योतिष?

ज्योतिष और अहं ब्रह्मास्मि

योग, दोष और ज्योतिष

केस स्टडी- 1

केस स्टडी- 2

केस स्टडी- 3

केस स्टडी- 4 और 5

केस स्टडी- 6

केस स्टडी- 7

केस स्टडी- 8

केस स्टडी- 9

केस स्टडी- 10

केस स्टडी 11

ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता, अगर आप.....

ज्योतिषीय यात्रा एवं कुछ सूत्र

हमें भी ज्योतिष सीखनी है क्या करें ?

ज्योतिष उपाय और दिनचर्या

मैं गिनती के पाँच- छः उपाय में से दो- तीन उपाय ही हर किसी को बताता हूँ| कई बार किसी को एक ही उपाय बताता हूँ| लेकिन लोगों को आदत होती है भयंकर टाइप के उपाय सुनने की| ....तो कई बार लोग भरोसा नहीं करते मेरे बताये उपायों पर| मेरे कुछ ज्योतिष मित्र मुझे बोलते भी हैं कि मुझे लोगों को नग (रत्न) सुझाने चाहिए, ताकि वह मुझे गम्भीरता से लें या मेरे बताये उपाय करें| लेकिन मैं इन चक्करों में नहीं पड़ता| मुझे ये बात पहले दिन से पता थी कि अगर नग बेचने लग गया तो नग ही बेचता रह जाऊँगा| आध्यात्मिक यात्रा यातना में बदल जायेगी।

ऐसा नहीं है कि मैं नग सजेस्ट नहीं करता, लेकिन सबसे आखिरी में| मेरा पूरा जोर रहता है कि लोग सात्विक उपाय करें, क्योंकि उसके द्वारा आये बदलाव स्थायी होते हैं, सकारात्मक होते हैं।

देखिये न, ये इतना मुश्किल भी नहीं है| सूर्योदय के समय उठिये, सूर्य का उपाय हो जायेगा| तीन-चार किलोमीटर पैदल चलिये, मंगल का उपाय हो जायेगा| ज्यादा से ज्यादा मौन रहने की कोशिश कीजिये, बुध का उपाय हो जायेगा| अच्छी किताबें, अच्छे लोगों के सम्पर्क में रहिये, गुरु का उपाय हो जायेगा| घर में फूल लगाइये, शुक्र/ बुध का उपाय हो जायेगा| किसी गरीब के साथ या जो आपसे कमजोर है, उसके साथ दुर्व्यवहार मत कीजिये, शनि का उपाय हो जायेगा| रात्रि के पहले प्रहर यानी 6 से 9 के बीच सोने की कोशिश कीजिये या सिरहाने की तरफ एक मिट्टी के बर्तन में पानी रखकर सोइये, आदि।

इसी तरह के काफी आसान- आसान उपाय हैं, जो लोग बताने के बाद भी नहीं करते हैं| वहीं दूसरी तरफ जो करते हैं, उनमें से 80- 90% लोगों को जरूर फायदा होता है और कुछ एक मामलों में उन्हें उनकी उम्मीद से बढ़कर चीजें प्राप्त हुई हैं।

इस विषय को लिखने के दो उद्देश्य थे| पहला, अपनी दिनचर्या ठीक करने की कोशिश कीजिये और दूसरा, सात्विक उपाय करने की कोशिश कीजिये।

ज्योतिष यात्रा

ज्योतिष अध्ययन के शुरुआती सालों में जिस एक बात की तरफ मेरा बहुत ध्यान गया, वह बात ये थी कि यदि भविष्य में ऐसा हो कि आप बहुत बड़े ज्योतिषी बन गये और आपको सामने वाले की कुंडली के बारे में अच्छी और बुरी सब बातें पता चल जाएँ और वह व्यक्ति आपका बहुत जानने वाला हो या आपका बहुत चहेता हो, ऐसी स्थिति में उसके बारे क्या ज्योतिषी को बहुत बुरा लगता होगा?

लेकिन अब मुझे यह लगता है कि जब आप एक लम्बी ज्योतिषीय यात्रा कर लेते हैं, तो आपके अंदर अल्प मात्रा में ही सही आध्यात्मिकता का विकास भी हो जाता है। आप समझ जाते हैं कि हम सब यात्री हैं| सब की अपनी- अपनी यात्रा है, सब के अलग-अलग स्टेशन हैं| हाँ, यह सम्भव है कि हमारे कुछ सहयात्री हो सकते हैं, जो कुछ समय जीवन यात्रा में हमारे साथ रहें| लेकिन, कुछ समय बाद हम उनके साथ या वह हमारे साथ नहीं रहेंगे| ये अकाट्य सत्य है।

जीवन बहुत आसान है और सबसे कठिन भी| अगर आप जीवन में किसी से कोई उम्मीद रख रहे हैं, तो आप निश्चित तौर पर दुःखों को निमंत्रण दे रहे हैं| यहाँ तक कि अगर आप खुद से भी कोई उम्मीद रख रहे हैं, तो भी आप कभी न कभी दुःखी जरूर होंगे| ...क्योंकि आपका भविष्य सिर्फ आपकी मेहनत पर निर्भर नहीं करता| ऐसी बहुत सी सम्भावनाएँ हैं, जो खेल बना और बिगाड़ सकती हैं और जिन पर आपका रत्ती भर भी नियंत्रण नहीं है।

एक ज्योतिषी को बहुत जल्दी उस स्तर पर पहुँच जाना चाहिए, जहाँ पर न उसके लिए कुछ दुःख हो और न ही सुख हो| वरना वह अपनी कुंडली देखकर ही रोता रहेगा कि फलाना ग्रह यहाँ बैठा होता तो मैं ये कर लेता, ये ग्रह उच्च का होता तो मेरे पास ये होता, आदि-आदि। हर दिन मेरे पास कई कुंडली आती है, जिसमें मुझे लगता है कि यह चीजें इसके साथ बुरी हो सकती है, ...या ये चीजें अच्छी हो सकती हैं| मेरी हमेशा कोशिश रहती है कि मैं बस सामने वाले को एक दिशा दिखा दूँ, कुछ उपाय बता दूँ| उन्हें करना या न करना तो उसके ऊपर है| ....और हम ये भी उसे बता सकते हैं कि जो चीज आपको बुरी लग रही है, अगर आप उसको थोड़ा सा घुमाकर देखेंगे तो आपको लगेगा कि यह जीवन की सबसे अच्छी घटना है| मेरा अपना इसमें यह मानना है कि जो बुरा वक्त होता है, वह आपकी जिंदगी का सबसे अच्छा वक्त होता है| ....क्योंकि उस वक्त आपको सब कुछ साफ- साफ दिख रहा होता है कि कौन आपके साथ है और कौन अपने खिलाफ है? आदि।

बुरे से बुरे योग के भी अपने फायदे हैं, अच्छे से अच्छे योग के भी अपने नुकसान है| अनपढ़ परिवार में दसवीं पास बच्चा भी कलेक्टर समझा जाता है और कलेक्टर परिवार में डबल एमए किया हुआ व्यक्ति भी अनपढ़ समझा जा सकता है।

रत्नों का बाजार

शीर्षक में बाजार शब्द इसलिए लिखा है, ताकि जितना हो सके आप इससे बचने या दूर रहने की कोशिश करें। अब विषय की ओर लौटते हैं| कुछ दिन पहले एक दोस्त को सुनहला चाहिए था| वह मैं अपने एक जानने वाले के पास खरीदने गया था, जहाँ रत्न बाजार से काफी कम कीमत पर मिल जाते हैं| वहाँ मेरी नजर इन बड़े- बड़े जरकनों (हीरे का उपरत्न) पर पड़ी और मैं खुद को रोक नहीं पाया| तस्वीर खिंचवाने से यही जादू भी है| शुक्र का असर आदमी को मंत्रमुग्ध कर देता है| फिल्मी दुनिया, नए कपड़े, परफ्यूम आदि इसके कारक हैं।

मैं जिस जानने वाले से रत्न खरीदता हूँ, उनकी तरफ से मुझे ये मशवरा हमेशा मिलता है कि आपको हर किसी को रत्न के लिए प्रेरित (रिकमेंड) करना चाहिए| ख़ैर, मैं पहले भी अंत में रत्न रिकमेंड करता था| पर, अब मैं सामने वाले के पूछने पर बता तो देता हूँ कि ये रत्न पहन सकते हैं, लेकिन अपनी तरफ से रिकमेंड नहीं करता ।

अब इसके बाजार वाले हिस्से पर थोड़ी बात करते हैं| रत्न की क्या कीमत होती है? यकीन मानिये, रत्न की कोई कीमत नहीं होती| मोती आपको 5-10 रुपये से लेकर 5000 तक का भी मिल जाएगा| हाँ, उनकी क़्वालिटी में फर्क होगा, लेकिन आप इसे कभी नहीं समझ पायेंगे| यही हाल दूसरे रत्नों का भी है ।

थोड़ा समझ लेते हैं, किस ग्रह या राशि के लिए कौन सा रत्न/ उपरत्न होता है? और उसके अलावा हम कौन सा अथवा क्या सबसे आसान उपाय कर सकते हैं?

12 राशियाँ होती हैं और नौ ग्रह होते हैं| हर राशि का एक स्वामी होता है| सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर हर ग्रह दो राशियों का स्वामी होता है| राहु केतु किसी राशि के स्वामी नहीं होते, ये छाया ग्रह हैं।

मेष/ वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल होते हैं और मंगल का रत्न मूंगा होता है| वृष/ तुला राशि के स्वामी शुक्र होते हैं, शुक्र का रत्न हीरा और जरकन होता है| मिथुन/ कन्या राशि के स्वामी बुध होते हैं, बुध का रत्न पन्ना और ओनेक्स होता है| कर्क राशि के स्वामी चन्द्रमा होते हैं, चन्द्रमा का रत्न मोती होता है| सिंह राशि के स्वामी सूर्य होते हैं, सूर्य का रत्न माणिक होता है| धनु/ मीन के स्वामी गुरु होते हैं, गुरु का रत्न पुखराज और सुनहला होता है| मकर/ कुम्भ राशि के स्वामी शनि होते हैं और शनि का रत्न नीलम, नीली होता है।

राहु केतु के रत्न क्रमशः गोमेद और लहसुनिया होते हैं| इन रत्नों की जगह आप इन ग्रहों के कारक खोजकर उनके जरिये भी आसान उपाय कर सकते हैं ।

ज्यादातर ज्योतिषी जातक को पुखराज/ नीलम/ पन्ना/ माणिक पहनने की सलाह देंगे, या मुमकिन है ये भी कहें कि उनसे ही खरीद लो| ....क्योंकि इसमें उनकी कमाई अच्छी हो जाती है अर्थात प्रॉफिट/ मार्जिन अच्छा मिल जाता है| दूसरा, कुछ ज्योतिषी आपसे कहेंगे कि वह आपको कोई रत्न सिद्ध करके देंगे, जिसकी कीमत थोड़ी ज्यादा होगी| मुझे लगभग 18- 19 साल का अनुभव है और मेरे पास फलित ज्योतिष का सरकारी डिप्लोमा भी है| .....तो यकीन मानिये, अब तक की यात्रा में मुझे इससे बड़ी झूठी बात कोई और नहीं लगती।

अंत में, मैं यही कहना चाहूँगा कि जो सिद्ध पुरुष होगा या किसी चीज को सिद्ध करने की शक्ति रखता होगा, वह एक धागे को भी सिद्ध कर देगा और मुफ्त में आपको देकर चला जायेगा।

ग्रुप इवेंट (सामूहिक कार्यक्रम) और ज्योतिष

अक्सर लोग सवाल (कुतर्क) करते हैं कि एक ही हॉस्पिटल में एक ही वक्त पर पैदा होने वाले दो बच्चों की किस्मत एक जैसी क्यों नहीं होती है? तो जवाब है कि दोनों बच्चों की देश, काल, परिस्थिति अलग- अलग होती है| अगर वह अलग- अलग माँ- बाप के हैं तो भी और अगर वो जुड़वाँ हैं तो भी| क्योंकि उनमें एक छोटा भाई है, एक बड़ा भाई है| एक छोटा भाई है तो एक बड़ी बहन आदि होंगे और देश, काल, परिस्थिति के अलावा हर 13- 14 मिनट के अंतराल में नवमांश कुंडली भी बदल जाती है| ....और वास्तविक फल नवमांश से ही पता चलते हैं।

वैसे तो ऐसे लोगों को मना (इग्नोर) कर देना चाहिये| मगर फिर भी, कभी मन हो तो उनसे ये जरूर पूछना चाहिए कि जब किसान सौ बीज लगाता है, समान तरीके से ख़्याल रखता है, तो हर बीज एक जैसा ही अंकुरित होकर, एक जैसा फल क्यों नहीं देता?

ये प्रस्तावना जरूरी थी ताकि समझ में आये कि हर व्यक्ति/ पौंधा/ जंतु/ कीट- पतंगा आदि एक अलग ही दुनिया (देश, काल, परिस्थिति) में यात्रा कर रहा होता है, जिसका दूसरे से लेना- देना है भी और नहीं भी| सबकी अपनी- अपनी यात्रायें हैं, अपनी- अपनी उपलब्धियाँ, अपनी-अपनी जीत और अपनी- अपनी हार भी है।

अब सवाल ये है कि जो ग्रुप इवेंट या सामूहिक कार्यक्रम होते हैं, (जैसे किसी जगह अनुष्ठान हो रहा है, किसी जगह राम कथा हो रही है, किसी जगह विवाह कार्यक्रम आदि है) तो वहाँ इतने सारे लोग आए होते हैं, तो क्या सभी की कुंडली में वहाँ आने का योग मौजूद होता है?

मैं इसी विषय पर अपने कुछ विचार रखना चाहता हूँ| हम इसे इस तरह का एक उदाहरण लेकर समझते हैं कि अगर कोई विवाह कार्यक्रम है और वहाँ 10- 15 मेहमान आए हैं तो जाहिर सी बात है कि अगर वहाँ लड़की/ लड़के की शादी है तो उसके सारे रिश्तेदार अलग- अलग होंगे| सबको अलग- अलग तवज्जो मिलेगी| वह अलग- अलग देश से आये होंगे, अलग- अलग काल से आये होंगे और अलग- अलग परिस्थिति में आये होंगे । हो सकता है कुछ लोग मजबूरी में आए हो, कुछ लोग घूमने के उद्देश्य से आये हों, कुछ लोग विवाह अटेंड करने के ही उद्देश्य से आए हों| कुछ लोग इसलिए आ गये हों कि खाली थे तो चलते हैं| कुछ लोग इस उद्देश्य में आ गए होंगे कि वहाँ से कुछ उपहार मिल जाएगा और ये लालच उन्हें विवाह कार्यक्रम तक ले आया होगा| कुछ लोग ये देखने आ गए होंगे कि व्यक्ति विवाह में कितना खर्चा करता है? थोड़ा बारीकी से अध्ययन करेंगे तो आप पायेंगे कि हर व्यक्ति की परिस्थिति अलग- अलग होगी तो फलादेश अलग होना स्वाभाविक ही है।

मैं इसी तरह के एक ग्रुप इवेंट पर उसका जिक्र करना चाहता हूँ| ये थोड़ा गंभीर मुद्दा है| अगर आपको किसी बात का बुरा लगे तो आप मुझे माफ कीजियेगा।

जैसे हम देखते हैं कि प्राकृतिक आपदाएं आती हैं और लोग कहते हैं कि उस प्राकृतिक आपदा में 100 लोगों की जीवन लीला समाप्त हो गई, तो क्या सब की कुंडली में मृत्यु योग था?

इसे हमें इस तरह से समझना होगा कि जीवन में कई तरह के मृत्यु तुल्य कष्ट आते हैं| कई बार वह घटित थोड़ा ज्यादा तीव्रता से होते हैं, तो व्यक्ति की जीवन लीला समाप्त हो जाती है| कई बार व्यक्ति पर उसका असर तो पड़ता है, मानसिक या शारीरिक रूप से नुकसान भी होता है, उसकी हालत भी खराब होती है, लेकिन बच जाता है। किसी प्राकृतिक आपदा को उदाहरण के तौर पर देखें कि अगर कहीं बाढ़ आई तो जरूरी नहीं है कि हर किसी की जीवन लीला उसी वजह से समाप्त होगी| कुछ लोग पानी में डूबने के कारण प्राण खोयेंगे, कुछ लोग किसी पत्थर से टकराकर और

कुछ लोग डर के मारे अपने प्राण छोड़ देंगे| संभव है कुछ लोग सर में चोट लगने के कारण प्राण छोड़ सकते हैं, कुछ लोगों के फेफड़ों में पानी भर सकता है, कुछ लोग भूख- प्यास की वजह से जीवित नहीं बच पायेंगे।

अगर आप थोड़ा भी किसी घटना का बारीकी से अध्ययन करेंगे तो आप पायेंगे कि अगर कोई ग्रुप-इवेंट या कोई सामूहिक कार्यक्रम हो रहा है, तो उसमें आये हुए प्रत्येक व्यक्ति के वहाँ पहुँचने का कारण बिल्कुल अलग- अलग होगा| वैसे शायद इसे मेदिनीय ज्योतिष का अध्ययन करके और बारीकी से समझा जा सकता है| मगर मैंने जातक ज्योतिष के कुछ उदाहरणों के जरिये इस पर विचार रखने की कोशिश की है| ऐसा भी सम्भव है कि कुछ लोगों को ये बातें बिल्कुल निराधार लगें और कुछ लोगों को ये बातें बहुत रोचक लगें| मैं खुद दूसरी श्रेणी का व्यक्ति हूँ| मुझे ग्रुप इवेंट्स का अध्ययन करना ज्यादा जटिल और ज्यादा रोचक लगता है।

क्या राहु के उपाय असम्भव हैं ?

पिछले लेख में लगभग सभी ग्रह के आसान उपाय बताए थे| वो उपाय जिन्हें आप दिनचर्या का हिस्सा बना सकते हैं, लेकिन उसमें राहु और केतु के उपाय लिखना मैं भूल गया था| तो एक व्यक्ति ने फेसबुक कमेंट बॉक्स में उन उपायों को जानना चाहा| मैंने उनसे कहा- "राहु का सबसे आसान उपाय है कि इंटरनेट से दूरी बना ली जाये, साथ ही इलेक्ट्रॉनिक गैजेट से भी दूरी बना ली जाये| कुछ समय एकांतवास में रहा जाये|"

...तो उस व्यक्ति ने कहा कि यह होना संभव है आज के दौर में? ऐसा कोई नहीं कर सकता।

मैंने उसे बताया कि मैं छह- सात महीने पहले फीचर फोन प्रयोग करता था| इसमें न व्हाट्सएप था न ही इंटरनेट| मैं अक्सर ऐसा करता हूँ या यूँ कह लीजिये कि परिस्थिति ऐसी बन जाती है| जीवन में हर चीज से कुछ- कुछ वक्त का ब्रेक लेना हमेशा जरूरी होता है| ...क्योंकि इससे जब लौटते हैं तो दुगनी ताकत के साथ लौटते हैं।

अब सवाल आता है कि क्या इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को छोड़ देना इतना मुश्किल है? तो उसका जवाब कुछ ऐसा है कि "बहुत आसान है| जिस व्यक्ति को लगता है कि उसकी परेशानी बड़ी है और इंटरनेट छोटी चीज है, वह उसे छोड़ सकता है| जिस व्यक्ति को लगता है कि इंटरनेट बड़ी चीज है और परेशानी छोटी है, वह नहीं छोड़ सकता| तय आपको करना होगा कि आपके लिए जीवन में जीवन महत्वपूर्ण है या कुछ और?

राहु है महत्वकांक्षा, भौतिकवाद का प्रतीक और इंटरनेट, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उस महत्वकांक्षा में उत्प्रेरक का कार्य करते हैं| आपकी महत्वकांक्षा को बढ़ा देते हैं| आप इंटरनेट में नई- नई जानकारियाँ पढ़ते हैं, फेसबुक इंस्टाग्राम में लोगों को नए- नए उपहार खरीदते हुए देखते हैं, शॉपिंग वेबसाइट को देखते हैं तो जो कोई अच्छी चीज आप देखते हैं स्वतः ही उसकी तरफ आकर्षित हो जाते हैं । इस तरह आप जाने- अनजाने राहु के प्रभाव आ जाते हैं|

लेकिन जब आप कुछ वक्त के लिए इस सब से कट जाते हैं तो आप खुद के साथ होते हैं और उस वक़्त आप विचार कर सकते हैं कि आपका जन्म क्यों हुआ है? क्या सिर्फ ये सब चीजें ही जीवन के लिए जरूरी है? क्या रुपया, पैसा, शोहरत, बड़ा घर, बड़ी गाड़ी इतनी ही जरूरी है जीवन के लिए? या जीवन के लिए खुशी जरूरी है, शान्ति जरूरी है, सुकून जरूरी है।

यह सब आप तभी आप सोच पाते हैं, जब आप समाज से कटते हैं| क्योंकि जब समाज में आप रहते हैं, तब तो आप समाज के जैसे ही होते हैं| जैसा बाजार आपको नचाना चाहता है, आप नाच रहे होते हैं| अगर आप राहु के उपाय करना चाहते हैं, तो आप धीरे- धीरे इसकी शुरुआत कीजिये| पहले 1 दिन में एक घंटा बिना फोन के रहिए, फिर अगले दिन उसे 2 घंटा कीजिये| ऐसे ही तीसरे दिन 3 घंटा कीजिए| इस तरह आप उस स्थिति में पहुँच जायेंगे, जहाँ एक दो महीने फोन या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रहना आपके लिये छोटी सी बात होगी।

अंत में, मैं फिर से अपनी बात दोहराता हूँ "आपको तय करना है कि आपकी परेशानी ज्यादा बड़ी है या उसके उपाय"।

ज्योतिष, कमजोर राहु और जीवन

रचनात्मकता यूँ तो चन्द्रमा की देन है, मगर राहु भी इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार होता है| राहु के कारण ही व्यक्ति वाकपटु होता है, प्लानिंग में माहिर होता है, साथ ही जोड़- तोड़ करके अपना रास्ता बनाने की काबिलियत आदमी को राहु से ही मिलती है।

राहु टेक्नालॉजी का भी कारक ग्रह है| जो लोग कुछ ही मिनटों में लैपटॉप, कंप्यूटर, केलकुलेटर, टाइपराइटर आदि को ऑपरेट करना सीख जाते हैं, वह सभी राहु प्रधान होते हैं। अब सवाल आता है कि हम कैसे पता करें कि व्यक्ति का राहु कमजोर है? अगर आप आधुनिक समय की बात करें, तो राहु के कमजोर होने के प्रमुख लक्षण जो मुझे लगते हैं, वह यह है कि जैसे कोई व्यक्ति ह्वाट्सएप से कोई मैसेज उठाता है और अब देखते हैं कि व्हाट्सएप में जो मैसेज होते हैं, वह डॉट लगे हुए हैं, ताकि वह बोल्ड दिखें| अब व्यक्ति अगर सीधा- सीधा ही उसे वैसे ही पेस्ट करके फेसबुक में डाल देता है, तो आप मान सकते हैं कि उस व्यक्ति का राहु कमजोर है।

कई बार हम देखते हैं कि हम कहीं से कोटेशन उठाते हैं| अगर व्यक्ति वह ज्यों की त्यों कोटेशन फेसबुक पर डाल दे रहा है और उसमें कुछ भी बदलाव (मॉडिफाई) नहीं कर पा रहा है, तो हम कह सकते हैं कि उसका राहु भी कमजोर है। कई लोग होते हैं जो महँगे– महँगे फोन रखते हैं, लेकिन उन्हें उसके पूरे फीचर जीवन में कभी नहीं पता चल पाते और कई व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके पास खुद तो बड़ा फोन नहीं होता, लेकिन वह दूसरों के फोन देख कर या नेट से जानकारी इकट्ठा करके सब कुछ पता कर लेते हैं| जिन लोगों के पास टेक्नोलॉजी की सारी जानकारी होती है, ऐसे व्यक्तियों का मान सकते हैं कि उनका राहु अच्छा है और जिस व्यक्ति को टेक्नोलॉजी की नॉलेज कम है, आप मान सकते हैं कि उसका राहु कमजोर है।

राहु को बेसिकली प्रोग्रेसिव माइंड कह सकते हैं, जो नए नियम बनाता है या यूँ कह लें कि अपने नियम बनाता है| दूसरी तरफ जो जड़ों से जुड़ा रहता है, अपनी पुरानी परंपरा और सिद्धांतों को अपने साथ लेकर चलता है वह केतु है।

ऐसा बिल्कुल नहीं है कि जिसका राहु अच्छा होता है, वह राजा बनता है| ...या ऐसा भी नहीं है कि जिसका केतु अच्छा होता है, वह राजा बनता है| कई बार आप देखते हैं कि जो पुरानी परंपरा को फॉलो करने वाले लोग हैं, उनके घर में राहु नौकरी कर रहा होता है और कई बार नये बिजनेस आइडिया के साथ एक व्यक्ति नया स्टार्टअप खोल देता है और दुनिया बदल देता है| वही राहु है।

कहने का मतलब यह है कि व्यक्ति कैसा जीवन जियेगा? कितना सफल होगा? उसका फैसला नौ के नौ ग्रह करते हैं| किसी एक ग्रह के आधार पर राय बना लेना सबसे बड़ी बेवकूफी है।

मुझे लगता है कि जातक को मौलिक रहते हुए अपनी नजरों में सफल होना चाहिए, किसी से दौड़ नहीं करनी चाहिए| बाकी किसी के लिए जीवन में शांति महत्वपूर्ण है, तो किसी के लिए पैसा और किसी के लिए शोहरत है| फिर भी, आखिर में आपने देखा होगा कई सारे लोग सब कुछ पाकर भी नाकामयाब ही रहते हैं और कुछ फकीर होते हैं जिनके पास कुछ नहीं होता, मगर उनके पास सब कुछ होता है।

ज्योतिष और जातक

ज्योतिष से जुड़े होने का सबसे बड़ा फायदा ये है कि आपको हर दिन बहुत से लोगों से मिलने, उनके बारे में जानने और बातचीत करने का मौका मिलता है| आपको हर दिन इंद्रधनुष से लोग, इंद्रधनुष सी समस्याओं के साथ मिलते हैं और यकीन मानिए आप कितने भी बड़े ज्योतिषी बन जायें, हफ्ते दस दिन में एक ऐसी कुंडली जरूर आती है कि आपको लगता है "अभी तो कुछ भी नहीं आता| फिर से शून्य से शुरुआत करनी पड़ेगी।"

अभी तक कि बात करूँ तो जातकों के मामले ज्योतिष एकदम उल्टा चलता है| जो जातक शुल्क देता है, उसके गिनती के दो- तीन सवाल होते हैं| हद से हद चार और जो जातक निःशुल्क दिखवाना चाहता था, उसके पास दर्जनों सवाल होते हैं। एक और तरह के जातक होते हैं जो आपके पास आते हैं, सवाल पूछते हैं और फिर कुछ ही घण्टे बाद वो लोग वही सवाल दूसरे, तीसरे और चौथे ग्रुप में भी पूछते हुए पाये जाते हैं और सदा ही कन्फ्यूजन में रहते हैं।

कुछ जातक कहते हैं, अभी देख लीजिये, बहुत आवश्यक (अर्जेंट) हैं | उन्हें समझना होगा कि ज्योतिष में कुछ अर्जेंट नहीं होता| कुछ भी जादू/ चमत्कार नहीं होता| अगर आज कुंडली दिखायी, कल से उपाय करने शुरू किए तो भी 3- 4 महीने या कम से कम 15 दिन लगेंगे, स्थिति बदलने में।

कुछ लड़के अप्सरा जैसी लड़की से शादी करने का सपना देखते हैं| कुछ लड़कियाँ किसी सरकारी अधिकारी से शादी करने की इच्छा के साथ आती हैं| ....तो उन्हें ये भी समझना चाहिये कि जिस तरह वो खुद से साढ़े उन्नीस वालों को तवज्जो नहीं दे रहे हैं, तो क्या उन्हें वैसे लोग देंगे?

एक तरह के जातक और होते हैं जो दिया हुआ समय याद नहीं रखते और उल्टा आपसे कहते हैं "आपने याद क्यों नहीं दिलाया?" मतलब हद है, जिसको उपाय चाहिये वही तो याद दिलाएगा या नहीं? एक होती है बहरूपिया बिरादरी, जो कमेंट बॉक्स में या मैसेज में आपसे कहती है "ज्योतिष-वोतिष कुछ नहीं होता, सब ढोंग है| हिम्मत है तो मेरा भविष्य देखकर बताओ|" उनसे कहिये, जब सब ढोंग ही है तो क्यों इन चक्करों में पड़े हो भाई? चिल करो ना।

सबसे अंत में जिस तरह के जातकों से ज्योतिष अक्सर टकराता है, वह उस तरह के जातक होते हैं जो सामर्थ्य तो रखते हैं चम्मच जितना और चाहते हैं कि उस चम्मच में पूरा सागर उतर आये| उदाहरण के लिए कोई दसवीं पास लड़का या व्यक्ति है, वह सोचता है कि कोई उसे CEO बना दे| कोई व्यक्ति है जिसने कभी रामायण (मुहल्ले की रामलीला) में भी कोई किरदार नहीं निभाया और उसे ऑस्कर की तलाश है| कोई व्यक्ति जिसका घर खर्च बड़ी मुश्किल से चल रहा है और वह चाहता है कि वह महल में रहे, कोई व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को लेकर परेशान है, वो किसी खिलाड़ी की तरह फिट होना चाहता है, लेकिन सिगरेट/ शराब आदि नहीं छोड़ना चाहता। जबकि कहा भी गया है-

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

(उद्यम से ही कार्य सफल होते हैं, न कि मनोरथों से।

ठीक उसी प्रकार, जैसे सोये हुए शेर के मुख में हिरण नहीं आते।)

नोट :- जिंदगी कर्म प्रधान है| हर कुंडली में कम से कम पाँच राजयोग होते ही हैं किसी ना किसी तरह से| लेकिन लोगों को याद रखना चाहिए कि राजयोग उन्हीं के फलित होते हैं, जो पुरुषार्थ करते हैं ।

बुधादित्य योग और ज्योतिष

जिस प्रकार कालसर्प योग से जातकों को डराया जाता है और पैसा बनाया जाता है, ठीक उसी प्रकार बुधादित्य योग से जातकों को खुश करके पैसा बनाया जाता है। देखा जाए तो कालसर्प योग उतना बुरा नहीं है, जितना बताया जाता है| बड़े- बड़े सैन्य अधिकारियों और प्रशासनिक अधिकारियों की कुंडली में प्रायः यह योग पाया जाता है और बुधादित्य योग उतना अच्छा नहीं है, जितना बताया जाता है। बुधादित्य योग को समझने के लिए हम सबसे पहले ग्रहों की चाल को समझेंगे| हर महीने सूर्य की राशि बदलती है| ठीक उसी तरह शुक्र लगभग 23 दिन और बुध भी लगभग 14 दिन में अपनी राशि में बदलाव करते हैं| जिसके परिणाम स्वरूप आप देखते हैं कि अधिकतर कुंडली में सूर्य, बुध और शुक्र आस- पास ही होते हैं| ....तो ऐसे मामलों में कई बार बुधादित्य योग का बन जाना स्वाभाविक है ।

अगर आप मोटे- मोटे तौर पर कहें तो 70- 80% कुंडलियों में बुधादित्य योग देखा गया है| बुधादित्य योग का अच्छा होना या अच्छे फल देने इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह कौन से भाव में बन रहा है| महत्वपूर्ण बात ये भी है कि नवमांश कुंडली और षोडश वर्ग कुंडलियों में सूर्य और बुध की क्या स्थिति है? सिर्फ जन्म कुंडली में उसकी स्थिति अच्छी है, सिर्फ इससे कुछ नहीं होगा। मैं हमेशा कहता आया हूँ, आप किसी एक के आधार पर कोई धारणा ना बनायें और उससे होने वाले फलादेश से भी बचें| कुंडली (जीवन) किसी एक अच्छे ग्रह या एक बुरे ग्रह पर निर्भर नहीं करती| एक सफल, संतोषी और आनंदमय जीवन के लिए हर ग्रह का थोड़ा- थोड़ा अच्छा होना जरूरी है।

जिस तरह सिर्फ पेट भर खीर/ रायता खा लेने भोजन अधूरा है, आपको पूरी, चावल, दाल, चटनी थोड़ी- थोड़ी हर चीज भोजनथाल में चाहिए होती हैं| ठीक उसी तरह सिर्फ एक योग/ ग्रह को आधार में रखकर जीवन सुखद होगा, नहीं कहा जा सकता। कई बार आपने देखा होगा कि व्यक्ति बाहर से बहुत चमकता हुआ सोने की मोटी चेन पहना हुआ दिखता है, मगर गौर करने पर पता लगता है आर्टिफिशियल गोल्ड है या असली होने की सूरत में उस चेन की वजह से व्यक्ति की नींद हराम हो गयी है| अब उसे हर वक़्त खुद से ज्यादा उस सोने की मोटी चैन की चिन्ता रहती है| ...यानी चेन मिल गयी और चैन चला गया।

ज्योतिष और अकाल मृत्यु (आत्महत्या)

इस विषय पर एक लम्बे वक़्त से लिखने का मन था, मगर मेरी कोशिश रहती है कि ऐसे मुद्दों पर कम या ना ही लिखा जाये तो बेहतर| क्योंकि जाने- अनजाने में भी इस तरह के नकारात्मक शब्द किसी को भी लिखने, बोलने या सोचने नहीं चाहिए।

ज्योतिष में ज्यादातर लोग आत्महत्या के लिये कमजोर चन्द्रमा को दोषी मानते हैं| उनका तर्क होता है कि कमजोर मनःस्थिति वाला ऐसे कदम उठाता है| मैं इस बात से पूरी तरह इत्तेफाक नहीं रखता| सोचिये, जो व्यक्ति इतनी कमजोर मनस्थिति वाला है कि सकारात्मक नहीं सोच पा रहा, क्या वह व्यक्ति आत्महत्या जैसा बड़ा कदम उठाएगा? मैं हमेशा कहता हूँ, किसी भी घटना के घटित होने का जिम्मेदार एक ग्रह नहीं होता| एक ग्रह के आधार पर फलादेश करने वाला या तो स्वयं मूर्ख है या सामने वाले को बना रहा है।

आपने देखा होगा आत्महत्याओं के मामले में कई बार ऐसे लोग होते हैं जो अपने क्षेत्र में अच्छा कर रहे होते हैं या कर चुके होते हैं या भी सम्पन्न घरों से होते हैं| क्योंकि जो कमजोर है, गरीब है, उसके जीवन में तो इतनी उलझनें है कि उसके पास समय ही नहीं कि इस बारे में सोचे| ऐसा कोई कदम उठाये। बहुत से लोगों में ये भ्रांति है कि चन्द्रमा आत्महत्या के लिए जिम्मेदार है| चन्द्रमा मन का कारक है, इसलिए ये एक आम धारणा बनी हुई है| जबकि सच्चाई यह है कि नौ के नौ ग्रह इस तरह की घटना के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

कुछ काल्पनिक उदाहरण के जरिये यह समझने की कोशिश करते हैं| उदाहरण के तौर सूर्य से शुरु करते हैं| एक प्रशासनिक अधिकारी है, जो घूंस लेते पकड़ा गया या कहीं किसी छुटभइये नेता ने उसे थप्पड़ लगा दिया| सोचिये, क्या इसमें चन्द्रमा का प्रत्यक्ष रूप से लेना देना है? लेकिन कई बार ऐसे मामलों में लोग आत्मघाती कदम उठा लेते हैं । मंगल का उदाहरण देखिये, एक खिलाड़ी है जो लगातार तरक्की कर रहा है| इस वजह से घर- परिवार को वक़्त नहीं दे पा रहा है या और आगे बढ़ने के लिए नशा करने लगा| नशे की लत लग गयी, इस वजह से करियर ग्राफ गिरने लगा| लोगों की नजरों में भी पहले सी इज्जत नहीं रही और अगर वो कोई आत्मघाती कदम उठा ले तो चन्द्रमा इसमें भी सीधे- सीधे जिम्मेदार नहीं है।

बृहस्पति (गुरु) का उदाहरण देखते हैं| एक शहर के इज्जतदार अध्यापक हैं, जिनकी शहर में बहुत इज्जत है| बड़े से बड़ा व्यक्ति उन्हें झुककर प्रणाम करता है| अगर किसी बच्चे ने उन पर फीस चोरी जैसा छोटा सा भी इल्जाम लगा दिया या उन पर किसी ने सरकारी योजना के पैसे में गबन का इल्जाम लगा दिया या उनकी संतान ने उनकी इच्छा के विरुद्ध शादी कर ली| (मेरे हिसाब से सबको अपनी मर्जी से अपनी जिंदगी के फैसले लेने का अधिकार है) जिससे उनकी वर्षों की प्रतिष्ठा धूमिल हो गयी, तो क्या ये सम्भव नहीं कि वो कोई आत्मघाती कदम उठा लें और इसमें भी चन्द्रमा सीधे- सीधे जिम्मेदार नहीं है।

शायद ऐसे कई मामले आपने अपने आस-पास भी देखें होंगे| तो ज्योतिष में रुचि रखने वाले लोगों से मेरा निवेदन है कि अगर वो ज्योतिष सीखना चाहते हैं तो किसी भी घटना का ऊपर- ऊपर से अध्ययन ना करें बल्कि उसकी जड़ में जाने की कोशिश करें| देखें उस जड़ को पानी कहाँ से कैसे मिल रहा है?

ज्योतिष - मित्र और भाग्योदय

हर मनुष्य के पास सीमित क्षमताएँ होती हैं| सबके अपने गुण- अवगुण होते हैं| अगर कोई सज्जन है तो चाह करके धूर्त नहीं बन सकता और अगर कोई धूर्त है तो चाह कर भी कभी सज्जन नहीं बन सकता। आज मैं इसी के बारे में कुछ बात करूँगा कि आप किस तरह के लोगों से मित्रता रखकर सफल हो सकते हैं?

उदाहरण के तौर पर अगर आपकी कुंडली में गुरु कमजोर है तो आप पढ़े- लिखे बुद्धिजीवी वर्ग से मित्रता करके अपना गुरु बिना किसी उपाय के सुधार सकते हैं| अगर आपकी कुंडली में मंगल कमजोर है तो आप किसी खिलाड़ी या शहर के किसी दबंग व्यक्ति से मित्रता करके अपना मंगल सुधार सकते हैं| अगर आपकी कुंडली में बुध कमजोर है तो आप व्यापारियों से मित्रता करके अपने बुध को मजबूत कर सकते हैं|

ठीक इसी तरह, जो भी ग्रह जिस तरह के व्यक्ति से संबंधित है, आप उस तरह के व्यक्ति से मित्रता करके अपने उस ग्रह के प्रभाव को बढ़ा सकते हैं, वो भी बिना उपाय किये।

यूँ तो आपको ये उपाय बहुत आसान लग रहा होगा, लेकिन यकीन मानिए यह इतना आसान उपाय नहीं| क्योंकि मित्रता करना तो आसान है लेकिन उसे जारी रखने के लिए आपको मित्रता दोनों तरफ से निभानी पड़ती है| अगर आप मित्रता करके निभाने में कमजोर हैं तो संभावना है कि चंद्रमा और बुध आपकी कुंडली में पीड़ित हो सकते हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू ये भी है कि हर किसी व्यक्ति का एक औरा यानी आभा मण्डल (प्रभाव क्षेत्र) होता है, जिसमें वो हर किसी को आसानी से आने नहीं देता| संत कभी डाकुओं को अपने समीप नहीं आने देंगे और न ही डाकू चाहेंगे कि कोई संत उनके बीच आकर रहे या मित्रता करे।

फिर भी मैं कई जातकों को इस तरह की सलाह जरूर देता हूँ| उन्हें इसमें दिक्कतें भी आती है क्योंकि उनका मन ही इसकी इजाजत नहीं देता| वो अपने मन को ही इसके लिए तैयार नहीं कर पाते| इसका एक आसान उपाय भी है| अगर कोई जातक इस उपाय को करना चाहता है और नहीं कर पा रहा है तो जरूरी नहीं वो किसी हमउम्र से ही मित्रता करे| वो अपनी उम्र से बहुत कम या बहुत ज्यादा वालों की भी तलाश कर सकता है।

करके देखिएगा, बहुत असरदार उपाय है और कहावत भी तो है "खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है"।

राहु, केतु और ज्योतिष

लगभग सभी ज्योतिषी राहु, केतु को बुरा बताते हैं और उन दोनों के नाम से जातक को खूब डराते हैं| लेकिन इस बात पर मेरे विचार कभी उनसे नहीं मिलते| राहु आपको डिप्लोमेटिक/ चतुर/ प्रैक्टिकल बनाता है, जिसकी वजह से आप जिंदगी जीना सीखते हैं। दूसरी तरफ केतु बिना कुछ सोचे बिना ध्यान भटकाये लक्ष्य की ओर ले जाना सिखाता है और जब दोनों का मिलन होता है तो आदमी तरक्की के सातवें आसमान को छू लेता है।

अगर हम पुराणों से भी इस प्रसंग को उठा कर देखे तो आप पायेंगे कि समुद्र मंथन के समय जब देवता और दैत्यों ने बराबर मेहनत की, यहाँ तक कि दैत्यों ने ज्यादा मेहनत की| क्योंकि वो वासुकी नाग के फन की तरफ थे और लगातार हताहत होने के बावजूद हिम्मत नहीं हार रहे थे| लेकिन जब अमृत निकला तो देवताओं ने छल से अमृत ले लिया और खुद पी लिया|

मगर इस दौरान सबसे ज्यादा जाग्रत दैत्य की वजह से ही यह भेद खुला, जो दैत्य उसके बाद राहु और केतू बना। दैत्य खराब थे या देवता अच्छे थे? मैं उन सब में नहीं पड़ना चाहता| मेरी नजर में हर कोई अपनी-अपनी जगह सही होता है।

मेरा अंत में बस यही कहना है कि राहु और केतु से मत डरिये, लेकिन जो डराये उससे जरूर डरिये।

जातक को हैरान कैसे करें?

कोशिश कीजियेगा कि यहाँ बतायी गई बातें आप कभी उपयोग में न लायें| ये बस जागरूक करने के उद्देश्य से बताई जा रही हैं ताकि कोई आपको हैरान न कर सके।

चन्द्रमा की स्थिति से आप जातक की राशि बता सकते हैं| जिस नम्बर पर चंद्रमा होगा, वही जातक की राशि होगी| उसी के जैसा उसके स्वामी के जैसा जातक का स्वभाव भी होगा। सूर्य की स्थिति देखकर आप जन्म का समय और महीना बता सकते हैं| केंद्र में सूर्य होने पर जातक का जन्म सुबह 6 से 8 के आस-पास होगा| बारहवें घर में सूर्य होने पर जातक का जन्म 8 से 10 के आस-पास होगा| इसी तरह लगभग हर दो- दो में सूर्य दाहिनी तरफ जाता रहेगा| महीना बताने के लिए कुंडली में सूर्य जिस राशि में होगा, उसी भारतीय महीने में जातक का जन्म हुआ होगा| जैसे चैत्र (मार्च- अप्रैल), वैशाख (अप्रैल- मई), ज्येष्ठ (मई- जून), आषाढ़ (जून- जुलाई), श्रावण (जुलाई-अगस्त), भाद्रपद (अगस्त- सितम्बर), आश्विन (सितम्बर-अक्टूबर), कार्तिक (अक्टूबर- नवम्बर), मार्गशीर्ष (नवंबर- दिसंबर), पौष (दिसंबर- जनवरी), माघ (जनवरी- फरवरी), फाल्गुन (फरवरी- मार्च)।

सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति देखकर जन्म पूर्णमासी के आस- पास हुआ है या अमावस्या के पास, ये पता लग जाता है| दोनों एक दूसरे से सात घर दूर हों तो पूर्णमासी का जन्म, साथ हों तो अमावस्या का जन्म होता है| इसी तरह एकादशी, द्वादशी तिथि का अनुमान भी लग जाता है। शनि की स्थिति देखकर आप जातक की उम्र का पता लगा सकते हैं| वर्तमान में शनि जिस राशि में है और कुंडली में जिस राशि में, वहाँ तक दो- दो साल जोड़िये और उसमें एक- डेढ़ साल बढ़ा दीजिये| वही जातक की उम्र होगी| कई बार 1 साल के जातक, 30 साल के जातक और 60 साल के जातक में शनि की स्थिति एक सी होती है तो उसके लिए आपको अध्यन करना होगा।

शनि, राहु, केतु जिस जगह होते हैं, उस भाव के प्रति विरक्ति (वैराग्य) पैदा करते हैं। चन्द्रमा जिस भाव में होता है, जातक उसी विषय में सबसे ज्यादा सोचता है| क्योंकि चन्द्रमा मन का कारक होता है।

इस तरह आप जातक की राशि, जन्म समय, जन्म का महीना, यहाँ तक कि दिन भी बता सकते हैं । जातक के मन में क्या चल रहा है और किस चीज के प्रति उसका रवैया उदासीन है? ये भी कई बार आसानी से जाना जा सकता है।

सामुद्रिक शास्त्र और फलादेश

सामुद्रिक शास्त्र यानी शरीर का हाव- भाव, चेहरा देखकर, लक्षण देखकर, शरीर की बनावट देखकर, किसी के बारे में फलादेश करना। यह बहुत ही आसान तरीका है| किसी के बारे में फलादेश करने का और इसके लिए आपको न कुंडली की जरूरत है, न उसका हाथ देखने की जरूरत है| लेकिन यह उतना ही कठिन भी है, क्योंकि इसके लिए आपको बहुत ज्यादा अभ्यास की जरूरत होती है।

जितना मैं समझ पाया हूँ, सामुद्रिक शास्त्र निर्भर करता है दो चीजों पर| पहले भाग में आप यह देखिए कि व्यक्ति का चेहरा किस जानवर से मिलता- जुलता है| उदाहरण के तौर पर शेर से, बंदर से, लोमड़ी से, तोते से, भैंस से या किसी अन्य जानवर से| उसका चेहरा जिस जानवर से मिलता जुलता होगा, आप पायेंगे कि उसके लक्षण भी काफी हद तक उसी जानवर से मिलते- जुलते होंगे। फिर इसके बाद एक और पायदान है| उसमें जब आप किसी व्यक्ति का चेहरा देखते हैं तो आप ये समझने की कोशिश कीजिये कि उसका चेहरा आपके किसी दोस्त से या किसी रिश्तेदार से मिल रहा है और जैसे आपके दोस्त या रिश्तेदार के गुण होंगे, वैसे ही उस व्यक्ति के गुण होने की संभावना भी रहती हैं|

कई बार तो आप यकीन नहीं करेंगे कि अगर उस रिश्तेदार के दो बच्चे हैं तो उस व्यक्ति के भी दो ही बच्चे होते हैं| अगर बड़ी बेटी, छोटा बेटा या बड़ा बेटा- छोटी बेटी है तो न मालूम कैसे? मगर ये बात भी कई बार सटीक बैठ जाती है।

ऊपर लिखी हुई बात सौ फीसदी सही है, आजमाई हुई बात है| आप भी कोशिश कीजिये, थोड़ी मेहनत कीजिये| हर किसी को गौर से देखिये, उसके जैसे तीन- चार लोगों पर शोध कीजिये| मुझे यकीन आपको बेहतर परिणाम मिलेंगे| कई बार तो आप इस विद्या का प्रयोग करके धूर्त लोगों को दूर से ही पहचान सकते हैं और अपना रास्ता पहले ही अलग करके उनसे बच सकते हैं।

ज्योतिष विज्ञान, ज्योतिषी कलाकार

ज्योतिष विज्ञान है, क्योंकि वो गणित पर आधारित है| लेकिन फलित कला है, क्योंकि वो देश, काल, परिस्थिति पर निर्भर करता है| जैसे पानी हर जगह उबलता 100℃ पर ही है, लेकिन जरूरी नहीं है कि हर जगह, हर वक़्त उसमें एक जैसा ही समय लगे। इसका दूसरा पहलू विज्ञान और वैज्ञानिक वाला भी है| जिस ज्योतिषी के पास आप गए हैं उसको ज्योतिष का कितना ज्ञान है? ये भी एक महत्वपूर्ण सवाल है|

वैज्ञानिक गलत हो सकता है, विज्ञान गलत नहीं होता। इस समय जो ब्रह्मांड में ग्रहों की स्थिति है, वही कुंडली में उतरती है| लेकिन फलादेश बहुत सी बातों पर निर्भर करता है।

जब पूर्णिमा होती है तो सूर्य और चन्द्र अपने से सात घर दूर होते हैं| जब अमावस्या आती है उस दिन साथ आ जाते हैं| इससे ज्यादा क्या विज्ञान हो सकता है? दीपावली के दिन सूर्य- चन्द्र साथ में हैं या नहीं? ये देखिये, क्योंकि दीपावली अमावस्या के दिन ही होती है और होली पूर्णिमा के दिन| .....तो 100 साल पहले की भी होली देखने पर आप पायेंगे उस दिन सूर्य और चन्द्रमा सात घर दूर होंगे।

बाकी जिसे सिर्फ कुतर्क ही करने हो तो उसे "आपकी बात सही है, सब झूठ है" बोलकर आगे बढ़ जाइये।

एक रोचक बात बताता चलूँ, उस व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा (आस्था रेखा) नहीं होगी| होगी तो बहुत धुँधली सी | अगर कहीं से उसकी कुंडली मिली तो आप पायेंगे उस कुंडली में बुध+शनि, चन्द्रमा+शनि, चन्द्रमा+राहु जैसी युतियाँ या सम्बन्ध हो सकता है।

इसको पढ़ने के बाद आप भी ज्योतिषी बन जायेंगे

ज्योतिषी बनना बहुत आसान है या ये कह लीजिये कि इसको पढ़ने के बाद आप भी बन सकते हैं| ज्यादातर ज्योतिषी मनोविज्ञान से खेलते हैं| वह जिंदगी के सकारात्मक पहलुओं पर बात करते हैं, जो हर आदमी बनना चाहता है| ....यानी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम सी जिंदगी। वो ऐसी बातें कहते हैं जो 10 में से 8 बार सब पर सटीक बैठती है| जिन दो- चार पर सटीक नहीं बैठती, वो भी अपने मुँह से इंकार नहीं कर पाते।

जैसे- अगर मैं कहूँ कि आप बहुत ईमानदार हैं, साहब बहुत दयालु हैं| आप बहुत ही कर्मठ- जुझारू हैं, जो ठान लेते हैं वह कर के रहते हैं| आपको अपने परिवार से कभी उतनी सहायता नहीं मिलती, जितनी आपको उम्मीद होती है| अथवा आपके दोस्त आपको मौके पर धोखा दे जाते हैं| प्रेम संबंध में आपको निराशा हाथ लगती है, कोई आपको समझ नहीं पाता| आप बिजनेस करना चाहते हैं, मगर अच्छी टीम नहीं मिल पाती| आपके बच्चे आपकी सुनते नहीं, सुनते हैं तो सुनकर भी अनसुना कर देते हैं| इन बातों से आप इनकार नहीं करेंगे। ऐसी और भी बहुत सी चीजें हैं|

कम से कम एक हजार| सब सकारात्मक चीजें हैं, जैसा मनुष्य होना चाहता है| एक बुरा से बुरा आदमी भी खुद को अच्छा ही समझता है| ये सब याद कर लीजिये| आप भी अच्छे ज्योतिषि बन जायेंगे| लेकिन अच्छे ज्योतिषि होने की यात्रा बहुत कठिन है| उसका रास्ता आपको स्वयं खोजना होगा।

मैं किसी को अच्छा बुरा नहीं कह रहा बस अपनी बात उन लोगों तक रख रहा हूँ जिनकी ज्योतिष में दिलचस्पी है और मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि जब तक कोई ज्योतिषी आपके भूतकाल से जुड़ी चीजें आपको नहीं बता रहा है, आपके भविष्य को लेकर उसके पास कुछ बातें बताने को नहीं है, अगर वह आपको सकारात्मक एनर्जी नहीं दे पा रहा है, अगर वह आपके दुख को सुख में नहीं बदल पा रहा है, तो आपकी नजर में वो व्यक्ति कितना भी ज्ञानी क्यों न हो? मेरी नजर में वो ज्योतिषी नहीं है।

बाकी ऊपर लिखी हुई बातों का आजमा कर आप भी ज्योतिषी बन सकते हैं| धन्यवाद।

ज्योतिष यात्रा

मेरे कई मित्र जानना चाहते हैं कि मैंने कौन सी किताबें पढ़ी हैं? मैंने किस तरह से ज्योतिष सीखी और वो किस तरह से इसे सीख सकते हैं? ....तो मैं बस यही कह सकता हूँ कि मेरा तो बस एक ही फंडा है| मैं हर ग्रह को एक आदमी मानता हूँ और जो एक आदमी के लक्षण होते हैं, सबसे सज्जन होने पर और सबसे धूर्त होने पर, उसी के हिसाब से फलादेश कर देता हूँ। उसके साथ दूसरा कौन सा ग्रह बैठा है? कौन उसे देख रहा है? उनके क्या लक्षण हैं? ये देखना भी बहुत जरूरी है।

जानवरों का बारीक अध्ययन करके भी आप काफी कुछ सीख सकते हैं| जैसे राहु के गुण बिल्ली से मिलते हैं, केतु के गुण कुत्ते से मिलते हैं, गुरु के गुण गाय से मिलते हैं, आदि।

उदाहरण के तौर पर एक चोर चोरों के साथ कैसे रहेगा? पुलिस के साथ कैसे रहेगा? अध्यापक के साथ कैसे रहेगा? और राजा के साथ कैसे रहेगा? ये देखना भी बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही वो चोर है तो उसके पीछे वजह क्या है? उसकी कोई मजबूरी है या किसी की भलाई के चोर बना है? या वो बस शौकिया चोरी कर रहा है? ये भी महत्वपूर्ण कारक है।

चोर की जगह पर आप कोई भी प्रोफेशन इंजीनियर/ डॉक्टर/ नेता/ समाजसेवी/ क्लर्क आदि ले सकते हैं| फल उसी के हिसाब से बदलते रहेंगे। इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं आता| मुझे तो 27 नक्षत्रों के नाम भी ढंग से याद नहीं| सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैं हमेशा कहता हूँ "किसी कार्य की सफलता इस पर भी निर्भर करती है कि वो काम आप स्वार्थ के वशीभूत होकर कर रहे हैं या परमार्थ के।" अगर आपका उद्देश्य परमार्थ है, तो यकीन मानिए भगवान आपका साथ देंगे। मुझे विश्वास है आप बहुत तेजी से अच्छे ज्योतिषी बनते जायेंगे| आपकी, कही बातें आश्चर्यजनक रूप से सत्य होंगी| लेकिन उसके लिए आपको ज्योतिष को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा| हर व्यक्ति, हर घटना पर बारीक नजर रखनी होगी| आपको लगातार खुद से सवाल पूछने होंगे कि ये क्यों हुआ? कैसे हुआ?

एक और महत्वपूर्ण बात जो शायद बहुत जरूरी है, जिसे लोग अक्सर भूल जाते हैं या याद नहीं रखना चाहते| वो बात यह है कि "आपको ज्योतिष से जातक का भला करना है अपना नहीं। "

अगर आप ये सारी बातें याद रखने में कामयाब रहे तो फिर विश्वास मानिये, ईश्वर आपकी न सिर्फ जरूरतों बल्कि आपकी ख़्वाहिशों का भी खुद ख़्याल रखेंगे।

राजा, उनके नौ रत्न और ज्योतिष

ज्योतिष के प्रभाव से कोई नहीं बच पाता है| मैंने कई ऐसे लोगों को देखा है जो मुँह से नास्तिक मगर उँगलियों से आस्तिक थे| यानी बोलते थे कि उन्हें भाग्य पर या इन चीजों पर भरोसा नहीं है, लेकिन उंगलियाँ अंगूठियों से भरी रहती थी और इसमें कोई गलत बात भी नहीं| हर कोई एक अच्छा वर्तमान व अच्छा भविष्य चाहता ही है। हर व्यक्ति किसी न किसी तरीके से किसी ग्रह का उपाय कर ही रहा होता है या किसी ग्रह को खराब कर रहा होता है| बस, फर्क इतना होता है कि उसका तरीका पूरी तरह से अलग भी हो सकता है| जरूरी नहीं कि हर कोई अपनी अंगूठी ही पहने, रत्न ही धारण करे या हर कोई उपवास रहे या मंत्रों का उच्चारण करे| जैसी देश काल परिस्थिति होती है, उसी के अनुसार उपाय भी होते हैं ।

इसके लिए सबसे पहले ग्रहों के कारक को समझना जरूरी है कि कौन सा ग्रह किस चीज का कारक होता है, या हो सकता है। हर ग्रह के अनेक कारक होते हैं और उन कारकों के हिसाब से हर आदमी उस ग्रह से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ा ही होता है| या तो घर में या कार्य स्थल में या कहीं और, इसी के अनुसार जातक को अच्छे या बुरे फल मिलते हैं।

उदाहरण के लिए थोड़ा इतिहास खँगाले तो हम पाते हैं हर एक बड़े राजा के दरबार में नवरत्न हुआ करते थे| कोई वाकपटु था, कोई ज्ञानी, कोई संगीतज्ञ तो कोई कूटनीतिज्ञ। मेरा पूरा विश्वास है कि ये नौ रत्न 9 ग्रह का ही प्रतिनिधित्व करते थे| हर एक व्यक्ति एक न एक ग्रह का प्रतिनिधित्व करता ही था।

अगर आप थोड़ा गंभीरता से विचार करें तो इसके अलावा एक और बात पायेंगे कि क्रूर से क्रूर राजा भी व्यायामशाला बनवाते थे, मंदिर बनवा देते थे; धर्मशाला बनवा देते, पानी के तालाब, स्कूल आदि बनवाते थे। यह सभी किसी न किसी कारक का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अंत में बस यही कहना चाहूँगा कि अगर आपको कोई ज्योतिषी कोई महँगा उपाय बताये और आपको लगे कि आप उस उपाय तो करने में असमर्थ हैं, तो दूसरा उपाय पूछिये| एक ग्रह के लिए कई सारे उपाय होते हैं।

ज्योतिष और रत्न

रत्न कब या क्यों पहनें? जितना मुझे ज्ञान है, उसके आधार पर तीन तरह के उपाय होते हैं| शारीरिक, मानसिक और आर्थिक| मेरा निजी अनुभव कहता है कि सबसे अच्छे शारीरिक उपाय, फिर मानसिक उपाय, उससे बाद आर्थिक उपाय प्रभावी होते हैं। रत्न पहनना या धारण करना आर्थिक उपाय के अंतर्गत ही आता है।

जब व्यक्ति के पास शारीरिक उपाय यानी किसी की सेवा करने, मानसिक उपाय यानी मन्त्र एवम उपवास रखने लायक, देश काल अथवा परिस्थिति ना हो तो ऐसे में व्यक्ति को रत्न धारण कर लेना चाहिए।

रत्न की कीमत क्या? रत्नों की कोई कीमत नहीं होती| मैंने पाँच रुपये का मोती भी देखा है और तीन हजार का भी. मैंने सत्तर रुपये का लहसुनिया भी देखा है और आठ सौ का लहसुनिया भी देखा है। रत्नों की कीमत पूरी तरह से विश्वास पर निर्भर करती है| आपको ज्योतिष में कितना विश्वास है, ज्योतिषी पर कितना विश्वास है और अन्त में सबसे जरूरी खुद पर कितना विश्वास है? मुझे देवदार की लकड़ी धारण करके पुखराज जैसे फल मिले थे।

रत्न पहनने चाहिए या नहीं? सबके अपने अपने तर्क हैं| सब अपनी अपनी जगह सही हैं| मेरे तर्क ये हैं कि नहीं पहनने चाहिए। पुखराज/ माणिक/ मूंगा धारण करने के बजाय खुद को पुखराज/ माणिक/ मूंगा बनाने की दिशा में प्रयास करना चाहिए जातक को।

ज्योतिष और राज योग

ज्योतिष में राजयोग पर बहुत चर्चायें होती हैं| हर ज्योतिषी जातक को कहता ही है कि आपकी कुंडली में राजयोग है और कई बार एक नहीं, तीन- चार राजयोग बताता है। राजयोग के विषय में बताया जाता है कि राजा (बड़े अफसरों) से निकटता रहेगी| उनके साथ रहेंगे और जातक उछलने कूदने लगता है| जैसे दुनिया जीत ली हो । मुझे लगता राजयोग की सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप राजा के करीब हैं, (वो तो शहर का हर तीसरा चौथा आदमी होता ही है) बल्कि इस बात और निर्भर करती है कि राजा आपके कितने करीब है?

ज्योतिषी ईश्वर के पोस्टमैन

जिस तरह डाकिया चिठ्ठियाँ पहुँचाता है मगर उसमें कुछ फेर बदल नहीं कर सकता, ठीक उसी तरह ज्योतिषी भी डाकिये होते हैं| ईश्वर के डाकिए! जो भविष्य में होने वाली घटनाओं को कुछ पहले बता देते हैं। एक अच्छा डाकिया ज्यादा से ज्यादा ये कर सकता है कि वो बुरी ख़बर होने पर पढ़ने वाले को हौंसला दे, हिम्मत दे कि घबराइए मत सब ठीक हो जायेगा| कुछ दिन पहले तो इससे बुरी ख़बर सुनी थी मैंने| फलाने गाँव/ शहर में और अच्छी ख़बर होने पर भी ऐसे बताये जैसे सामान्य सी बात हो ताकि ख़बर सुनने वाला व्यक्ति उतावला न हो, ज्यादा उम्मीद ना बाँध ले।

ख़ैर, होता इसका बिल्कुल उलट है| आजकल ज्यादातर ज्योतिषी त्रिकालदर्शी होने का दावा करने लगे हैं| खुद के कहे को पत्थर की लकीर बताने लगे हैं और जो जातक पहले से परेशान है, दुःखी है, उससे ज्यादा पैसा बटोरने लगे हैं। अब देखिये, पूरे तरीके से तय तो कुछ है नहीं| सम्भव है किसी ज्योतिष ने जन्मकुंडली देखी| वहाँ किसी चीज का योग था मगर नवमांश कुंडली में ऐसा योग ही नदारद था और नवमांश का उस ज्योतिष को ज्ञान नहीं है या बाकी षोडश कुंडलियों को उसने कभी नाम ही नहीं सुना| .....तो वो कैसे कह सकता है कि "लिखकर ले लीजिए, यही होगा..."।

ज्योतिषी को तो पीड़ाहारी होना चाहिए कि सामने वाले व्यक्ति की सारी पीड़ा हर ले और सामने वाले को ऐसा आत्मविश्वास दे कि उसे लगे, वो भी हनुमान जी की तरह सूरज निगल सकता है| शब्दों पर ध्यान दीजिए| मैं आत्मविश्वास कह रहा हूँ, उम्मीदें नहीं कह रहा हूँ।

सनातन का दंड विधान कहता है कि एक ही गलती के लिए अलग- अलग लोगों के लिए अलग- अलग सजा निर्धारित है| शायद कुछ ऐसा की अगर कोई मूर्ख गलती कर रहा है तो उसे समझाकर माफ कर देना चाहिए| अगर कोई समझदार गलती कर रहा है तो उसे सजा देनी चाहिए और अगर कोई विद्वान गलती कर रहा है तो उसे उच्चतम् सजा देनी चाहिए।

याद रखिये, ज्योतिष विद्वान होते हैं और ईश्वर की लाठी में आवाज नहीं होती है।

ज्योतिष, विवाह और भौतिकवादी युग

मेरा काफी मन था कि मैं इस विषय पर कुछ लिखूँ |....तो बात दरसअल ये है कि मुझे लगता है कि जिस तरीके के विवाह अब होते हैं और जिस तरह के विवाह पुराने समय में होते थे, उनमें जमीन- आसमान छोड़िये, आसमान पाताल का अंतर है। मैं कोई हवा- हवाई बात करके इस मुद्दे को भटकाऊँगा नहीं, सीधे मुद्दे पर आता हूँ| लगभग डेढ़ दशक से मैं कुंडलियां देख रहा हूँ और काफी लोग मुझसे सिलसिले में बात करते हैं| मेरी राय जानना चाहते हैं। मेरे एक परिचित मित्र और मैं ज्योतिष पर अक्सर चर्चा करते हैं| वो ज्योतिष सीखना चाहते हैं और मैं भी उनके साथ बातचीत करके अपना ज्योतिष थोड़ा निखार लेता हूँ।

एक बार चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि सब की कुंडली वगैरा देखते हैं, 'जैक्सन' की क्यों नहीं देखते? उसकी शादी होने की उम्र निकली जा रही है| उसे लड़की नहीं मिल रही है। तो मैंने उनसे एक ही बात कही| मैंने कहा कि आपका सवाल ही गलत है| आप पहले 'जैक्सन' से पूछ तो लीजिये कि वह लड़की से शादी करना चाहता है या प्रॉपर्टी से शादी करना चाहता है? अथवा उसके बैंक बैलेंस से शादी करना चाहता है या उसके पहुँचे हुए खानदान से शादी करना चाहता है?

मुझे नहीं लगता कि वह लड़की से शादी करना चाहता है| अगर सच में करना चाहता है तो लड़कियों की कमी नहीं है| लेकिन दिक्कत ये है की इस दौर में कोई लड़की से शादी नहीं करना चाहता या कोई लड़की लड़के से शादी नहीं करना चाहती| वह सामान्यतया (बेसिकली) देखते हैं कि जॉब कैसी है,पैसा कितना है? अथवा खानदान में ऑफिसर कितने हैं? घोड़ा- गाड़ी- बंगले की क्या स्थिति है? लड़का/ लड़की एकलौता है या नहीं? ये सब भी अब देखा जाने लगा है और ये चीजें साथ में नहीं मिल पा रहीं और इससे उसकी तथा औरों की शादी नहीं हो पा रही है। मेरी इस बात से वो पूरी तरह इत्तेफाक रखते थे और उन्होंने हल्की आवाज में कहा "हां तुम्हारी बात सही है।"

कुंडली में राजयोग

कुंडली में जो भी राजयोग होता है, वह इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी 'देश, काल तथा परिस्थिति' कैसी है? अगर किसी की कुंडली में राजयोग होता है तो इसका यह मतलब होता है कि वह अपनी 'देश, काल तथा परिस्थिति' के हिसाब से ऊपर हो जायेगा| उसका कभी भी यह मतलब नहीं होता कि वह व्यक्ति राजा ही बनेगा| उदाहरण के तौर पर अगर किसी परिवार की आमदनी 10 रुपया महीना है और पैदा होने वाले जातक की कुंडली में राजयोग है, तो यह होगा कि उसकी आमदनी 50 रुपया महीना हो जाएगी, न कि ये, कि उसकी आमदनी 5 करोड़ रुपये हो जायेगी।

ज्योतिष और योग का सम्बन्ध

जो व्यक्ति योग के यम- नियमों का पालन करता है, उसे उसके बाद उतनी ज्यादा ज्योतिष सीखने की जरूरत नहीं पड़ती| वह एक समय आने के बाद अपने आप ही वाकसिद्धि को प्राप्त कर लेता है। ज्योतिष में वाकसिद्धि का क्या महत्व है? ये बात हर ज्योतिष जानने वाला व्यक्ति जानता और मानता है| वाकसिद्धि का मतलब अगर आसान शब्दों में समझें तो जो व्यक्ति ने कह दिया वह घटित हो जाता है। यानी सत्य के नियमित अभ्यास से व्यक्ति को वाकसिद्धि प्राप्त होती है और परमपिता परमेश्वर के आशीर्वाद से उसे जाने-अनजाने, भविष्य में होने वाली चीजों का पहले ही आभास हो जाता है और वह उसे तय वक़्त से पहले ही कह देता है।

सरकारी नौकरी और कुंडली

अक्सर आपने देखा होगा, भारत जैसे देश में दो सवाल प्रमुखता से पूछे जाते हैं| पहला ‘सरकारी नौकरी’ कब लगेगी? दूसरा शादी कब होगी? आज मुझे जितनी ज्योतिष की समझ है, उसके आधार पर सरकारी नौकरी के विषय पर थोड़ी सी बात करना चाहता हूँ | मुझे हमेशा लगता है कि देश, काल व परिस्थिति के हिसाब से चीजें बदल जाती हैं| कहीं सोना कीमती होता है, कहीं मिट्टी कीमती होती है। पुराने समय में लौटें तो "सरकारी नौकरी" यानी आराम की नौकरी, सुरक्षा की नौकरी| एक बार लग गयी तो छूटेगी नहीं, यानी फायदे ही फायदे।

आज के दौर में जब सरकारी नौकरियाँ कम या खत्म होती जा रही हैं; एमएनसी कम्पनियाँ बड़े-बड़े पैकेज दे रही है, साथ में विदेश के टूर करवाती हैं और अच्छी परफॉर्मेंस पर प्रॉफिट में शेयर भी देती हैं तो मुझे लगता है वो ‘सरकारी नौकरी’ वाली बात थोड़ी खारिज सी हो जाती है।

आपने देखा होगा कुछ लोग अच्छी ‘सरकारी नौकरी’ लगने के बाद भी परेशान रहते हैं| लगातार बदलने की सोचते रहते हैं| अगर आपने ऐसे लोग नहीं देखे तो बताता चलूँ ऐसे लोग होते हैं, वो भी बहुतायत में । एक ज्योतिषी को देश काल परिस्थितियों का ज्ञान होना बहुत जरूरी है, ताकि वो जातक को सही दिशा दिखाये।

कहा भी जाता है दुनिया में जितने भी अमीर हुए हैं, उनमें से किसी ने भी नौकरी नहीं की है।

देश, काल तथा परिस्थिति

बचपन से ही मेरी रुचि ज्योतिष में रही है, जिसकी वजह से कुछ एक भविष्यवाणियाँ सटीक साबित हुई हैं| जिसमें से कुछ एक दोस्तों की है और कुछ एक करीबी रिश्तेदारों की। बात तब की है, जब मैंने एक बार अपनी प्रोफाइल में जोश- जोश में वर्क के आगे ज्योतिष लिख दिया तो मुझे काफी क्वेरीज आने लगी| लोग अपना भविष्य जानने के लिए मुझे मैसेज करते| मैं कुछ के जवाब दे पाता, कुछ के नहीं। वैसे मुद्दे पर आते हैं| मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि कुंडली में देश काल परिस्थितियाँ कितना ज्यादा महत्व रखती हैं| क्योंकि जो भी आप भविष्यवाणी करते हैं, उसका फलादेश देश काल परिस्थिति के हिसाब से बदल जाता है।

एक दिन मुझे एक बड़े शहर की महिला का मैसेज आता है कि मैं बहुत परेशान हूँ| मेरी मदद कीजिए, मेरा जीना मुश्किल हो चुका है। मैंने कहा आप अपनी डिटेल भेज दीजिये, मैं देख लेता हूँ| उन्होंने अपनी डिटेल भेजी तो उनके पाँचवें घर में कुछ दिक्कत लग रही थी| पाँचवाँ घर विद्या का, प्रेम का, संतान का होता है| उनकी उम्र लगभग 35- 40 साल के आसपास थी। मैंने उनसे कहा- लगता है आप संतान को लेकर बहुत परेशान हैं| उसकी पढ़ाई को लेकर या शायद उसकी किसी बीमारी को लेकर? तो उन्होंने कहा यह भी है, लेकिन एक समस्या और है| मैंने फिर से कुंडली का निरीक्षण किया तो मुझे उसके अलावा कुछ खास नहीं दिखा। मैंने कहा, मुझे तो लगता है कि यही दिक्कत है, पांचवें घर से संबंधित ही| .....तो उन्होंने मुझसे कहा कि मेरा अपने पति के अलावा किसी और के साथ अफेयर चल रहा है| क्या संभावनायें रहती हैं कि मैं उसके साथ शादी कर लूँ?

तब मुझे ख्याल आया कि पाँचवा घर तो प्रेम का भी होता है और वह कुंडली बड़े शहर से थी, तो वहाँ उस उम्र में भी प्रेम, एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर की संभावनाएं रहती हैं| अगर वह छोटे शहर से उसकी होती तो शायद उस तरह की संभावना नहीं रहती| अगर होती भी तो शायद नहीं किया जाता| उस दिन के बाद मुझे लगा कि अपनी प्रोफाइल से ज्योतिष हटा लेना ही अच्छा है।

एक वाकया और बड़ा रोचक है| जब भी याद करता हूँ चेहरे पर हँसी आ जाती है| ग्रेजुएशन के वक्त मेरे कुछ दोस्तों को पता था कि मैं हल्का- फुल्का हाथ देख लेता हूँ | ....तो वह मुझसे पूछ कर जानते कि कौन सी रेखा क्या होती है और फिर अगले ही पल क्लास की सबसे खूबसूरत लड़की का हाथ पकड़कर उसका भविष्य बता रहे होते थे।

ज्योतिष और करियर

यह बात ज्योतिष से जुड़ी कम मनोविज्ञान से जुड़ी ज्यादा हो सकती है| वैसे मनोविज्ञान भी ज्योतिष का ही एक हिस्सा है, जिसका प्रतिनिधित्व चन्द्रमा करता है। अक्सर लोग कैरियर को लेकर सवाल करते हैं| बहुत ही उलझा हुआ सवाल है, कम से कम उस देश में जहाँ इंजीनियर, डॉक्टर, सरकारी नौकरी के अलावा शायद ही कोई चौथा विकल्प बच्चों को दिया जाता हो। इसके बाद जो भी करियर बच्चा चुनता है उसे, वो तो आवारा हो गया है, अपने मन की करता है या पता नहीं किन चक्करों में पड़ गया है? लगता है किसी ने जादू टोना कर दिया है? जैसी बातों का लगातार सामना करना पड़ता है।

ख़ैर, इसके भी दो पहलू हैं| अगर तो आप एक समाज की बनायी रेखा पर चल रहे हैं तो फिर ये सवाल आपके लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं हैं, क्योंकि भेड़चाल में चलते- चलते कोई कोर्स कर ही लेंगे| कहीं ना कहीं फिट हो ही जायेंगे और अगर आप अपना पैशन फॉलो कर रहे हैं तो भी ये सवाल आपके लिए जरूरी नहीं है क्योंकि पैशन तो वो चीज होती हैं जिसे करने में मजा आता है, आंनद आता है| जिस काम को आप बिना थके 18- 18 घण्टे कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति एस्ट्रोनॉट बनना चाहता है लेकिन किसी कारणवश वो नहीं बन पाया तो वह अपना पैशन कैसे फॉलो करेगा? तो शायद एस्ट्रोनॉट्स के ऊपर वीडियो बना सकता है, उनके बारे में रोचक किताबें पढ़ सकता है| एस्ट्रोनॉट के बारे में लोगों को अलग-अलग जानकारियाँ दे सकता है, एस्ट्रोनॉट से जुड़ी आर्ट बनाकर लोगों को जागरूक कर सकता है, एस्ट्रोनॉट की ड्रेस पहन के लोगों का मनोरंजन कर सकता है| शायद ऐसे हजारों काम है जिस तरह वह अपने पैशन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा रह सकता है और उसे फॉलो कर सकता है।

तो फिर क्या करियर वाला सवाल पूछना ही नहीं चाहिए? जरूर पूछना चाहिए| लेकिन तब जब व्यक्ति को खुद कुछ समझ ना आ रहा हो या दो करियर में से उसे एक का चुनाव करना हो कि किसको चुनने में ज्यादा तरक्की होगी। कुछ लोग सवाल लेकर आते हैं कि क्या मेरी सरकारी नौकरी लगेगी? अरे भइया इसका जवाब तो ज्योतिषी से ज्यादा बेहतर तुम्हारा कोचिंग इंस्टीट्यूट वाला दे सकता है और उससे भी बेहतर जवाब तुम खुद दे सकते हो।

हाँ, अगर चीजें होते- होते रुक जा रही हैं| जैसे कुछ नम्बर से बार- बार अटकना या परीक्षा/ इंटरव्यू वाले दिन कुछ ऐसा घटना, जिससे वहाँ तक पहुँच ही ना पाओ और ऐसा भी बार- बार होना तो शायद ज्योतिषी कुछ मार्गदर्शन कर सकता है। श्रीकृष्ण सबसे बड़े कर्मयोगी थे| उन्हें ज्योतिष और मुहूर्त जैसी कई विद्याओं का ज्ञान था और महाभारत में अर्जुन से कहा 'कर्म किये जा फल की चिंता मतकर' न कि ला अर्जुन! अपनी कुंडली दिखा।

नोट :- जीवन कर्मप्रधान है सब कुछ भूलकर मेहनत कीजिये| जो भी करेंगे उसमें जरूर सफलता मिलेगी।

ज्योतिष और प्रेत बाधा, ऊपरी हवा आदि

पहली लाइन में ही एक बार साफ कर देता हूँ| यकीनन ये चीजें होती होंगी, मगर मेरा इसमें रत्तीभर भी विश्वास नहीं है। प्रेत बाधा, ऊपरी हवा आदि के ज्योतिषीय पहलू को थोड़ा समझने की कोशिश करते हैं। हर हफ्ते कम से कम चार- पाँच ऐसे मामले आते ही आते हैं जिसमें कोई जातक या जातिका मेरे पास आकर कहता है कि गुरु जी (मुझे ये सुनना पसंद नहीं) मेरे पर या मेरे किसी परिचित पर किसी ने काला जादू कर दिया है| ....या मेरे पर किसी प्रेत का साया है या मुझे किसी प्रेत ने वश में कर रखा है और मुझे उस से छुटकारा दिलाइये। मैं हमेशा उसे कहता हूं कि यह मेरे विषय से बाहर की चीज है और आप किसी तंत्र साधना वाले व्यक्ति से संपर्क करिये|

लेकिन मैं उनको एक बात हमेशा कहता हूं कि शायद आपका जो चंद्रमा है वह सीधे- सीधे राहु या केतु के संपर्क में होगा और यह संभव भी है कि चंद्रमा कुंडली में काफी ज्यादा डैमेज होगा। आप यकीन मानिए 99 बार नहीं 100 बार उनका चंद्रमा इसी स्थिति में पाया जाता है या तो उनका चंद्रमा सूर्य के साथ होकर ग्रहण योग बना रहा होता है या उनके चंद्रमा राहु या केतु से ग्रसित होते हैं| जैसा कि आपको पहले से पता है कि चंद्रमा मन का कारक होता है| एक तरह से मन ही हमारी सोच भी है| जो हम सोचते हैं, जो हमें दिखाई देता है, उसमें मन का महत्वपूर्ण स्थान है और जब मन पर राहु यानी माया की एक तरह से छल की दृष्टि होती है या वो सूर्य के साथ होता है जो अपने आप में एक गर्म ग्रह है, तो वह इल्यूजन/ कंफ्यूजन क्रिएट करता है|

साथ में केतु भी चंद्रमा के लिए ग्रहण का काम करता है| जब चंद्रमा इन तीनों में से किसी ग्रह के प्रभाव में होता है, अक्सर कमजोर हो जाता है। कई बार हम देखते हैं कि सिक्के की आवाज भी हमें पायल की आवाज लगने लगती है, अंधेरे में हवा में उड़ता कपड़ा हमें भूत लगने लगता है, अंधेरे में बिल्ली का जाना ऐसा लगता है कि जैसे कोई हमारे बगल से गुजरा हो| ज्योतिषीय पहलू से यदि आप देखेंगे कि अगर कोई व्यक्ति आपके पास इस तरह की समस्या लेकर आता है और आप उसकी कुंडली में इसी तरह के योग/ युतियाँ/ दृष्टियाँ पायेंगे।

अंत में, मैं बस इतना कहना चाहूँगा कि जब हमारी किस्मत पहले से लिखी जा चुकी है तो दुनिया में कोई व्यक्ति इतना ताकतवर नहीं कि वह परमपिता परमेश्वर की लिखी हुई किस्मत को बदल सके। इसलिए वशीकरण, जादू टोना आदि पर मैं चाहकर भी विश्वास नहीं कर पाता, क्योंकि मुझे सृष्टि चलाने वाले परमपिता परमेश्वर पर हर किसी चीज से ज्यादा भरोसा है।

बाकी चन्द्रमा राहु या इस तरह की युतियाँ हमेशा खराब नहीं होती हैं, मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ| हैरी पॉटर की लेखिका जे के रोलिंग की कुंडली में भी कुछ ऐसे ही योग होंगे और शायद कुछ अच्छे ग्रह इस युति को देख रहे हों या उसने इससे बाहर निकलकर कुछ रचने का ठाना और रच दिया।

ज्योतिष और उपाय

ज्योतिष में फलादेश से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है उपाय बताना| ...क्योंकि उन्हीं से जातक का जीवन सुखमय होता है और वही जानने के लिए जातक आया भी होता है। बताने को तो जन्मकुण्डली में मंगल और शनि की स्थिति देखकर शरीर में तिलों की संख्या और स्थान भी बताया जा सकता है, मगर उसका क्या फायदा ? उस फलादेश से जातक कुछ देर के लिए चौंक ही सकता है| आराम उसे तभी मिलेगा, जब आपका बताया उपाय उसकी परेशानी दूर कर दे।

जितनी मुझे समझ है, उसके हिसाब से तीन तरह के उपाय होते हैं- मानसिक, शारीरिक और आर्थिक। मानसिक उपाय यानी मन्त्र- व्रत आदि करना, शारीरिक उपाय यानी सेवा आदि करना, आर्थिक उपाय यानी रत्न पहनना या कुछ दान करना। उदाहरण के तौर पर अगर हम मंगल को लें तो हनुमान चालीसा एवं मंगलवार के व्रत मानसिक उपाय हैं, व्यायाम, ब्लड डोनेशन, खेलकूद शारीरिक उपाय हैं एवं मूंगा आदि धारण करना आर्थिक उपाय हैं।

देश,काल व परिस्थिति के हिसाब से उपायों का स्वरूप बदलता रहता है कुछ दिन पूर्व एक मित्र को शनि सम्बन्धी उपाय करने को कहा था, जिसमें हर शनिवार शनि मंदिर जाकर सरसों के तेल का दिया जलाने को कहा| लेकिन मुश्किल ये थी वह मित्र देश से बाहर था और उस देश में न शनि का मंदिर था, न ही पीपल आदि का वृक्ष| तो उपाय कर पाना सम्भव नहीं था।

फिर मैंने उसे गूगल से कुछ शनि यंत्र की तस्वीरें भेजी और उसे कमरे में लगाकर हर शाम शनि मंत्र पढ़ने को कहा| सुनने में ये बात कुछ लोगों को झूठी और कुछ को चमत्कारिक लगे कि उसे 21 दिन बाद बताने को बोला था और जिस चीज के लिए वो शनि के उपाय कर रहा था, ठीक 21 दिन में वो चीज उसके साथ घटित हो गयी| ऐसा मुझे वाट्सएप के माध्यम से पता लगा।

हर ग्रह कुछ वस्तुओं/ पौधों का प्रतिनिधित्व करता है| अगर उन वस्तुओं/ पौंधों को आप अपने संग रखें तो और इन उपायों को करते वक़्त मन में पूरी श्रद्धा रखें तो भी आपको वही फल प्राप्त होंगे, जो लाखों के रत्न पहनकर प्राप्त होते हैं।

एक पहलू और गौर करने वाला ये भी है कि आपको या आपकी कुंडली देखने वाले को सही समस्या का पता चल रहा है या नहीं? कई बार व्यक्ति खाना इस वजह से नहीं खा रहा होता है कि उसके मुँह में छाला हो रहा होता है, जो 25 रुपये की दवाई से हफ्ते भर में ठीक भी हो सकता है| मगर गैर-अनुभवी या पैसा कमाने का उद्देश्य लेकर बैठे डॉक्टर 25 जाँचे लिख देते हैं।

अंत में, मैं बस यही कहना चाहूँगा अगर ठीक जगह लग जाये तो एक सुई भी ट्रक का टायर पंचर कर सकती है| ऐसा ही उपायों के साथ भी है।

कालसर्प का बाजार

काफी समय पहले हल्द्वानी में ही एक पण्डित जी से मिलने गया था| वैसे वो पूजा- पाठ करवाने वाले पण्डित जी थे, लेकिन सुना था कि उन्हें ज्योतिष भी का ज्ञान है| तो मेरी हमेशा कोशिश रहती है कि ऐसे लोगों से मिला जाये और बातचीत करके उनसे कुछ ना कुछ नया सीखा जाये| बातों के आदान- प्रदान से हमेशा कुछ नया सीखने को मिलता है| ....तो मैं जब उनके घर पहुँचा, हमारी थोड़ी बातचीत हुई ही थी कि एक व्यक्ति अपनी बहन की कुंडली लेकर आया| उस व्यक्ति की बहन की शादी नहीं हो पा रही थी| पंडित जी ने उसकी कुंडली देखी और बोले कि आपकी बहन की कुंडली में 'कालसर्प दोष' है और आपको अपने घर में भागवत करवानी पड़ेगी| अगर आप भागवत करवायेंगे तो यह चीजें थोड़ा सही हो जायेंगी और विवाह हो जायेगा।

लेकिन एक बात याद रखिए कि अगर आप सोच रहे हैं कि भागवत आसानी से हो जायेगा? यह दोष इतना खतरनाक है कि भागवत भी यह दोष आसानी से करने नहीं देगा। वह व्यक्ति थोड़ा मध्यवर्गीय परिवार से था तो भागवत करवा पाना उसके बस की बात नहीं थी| उस व्यक्ति ने पंडित जी को बोला "पंडित जी! यह तो बहुत भारी उपाय है, कुछ और हो सकता है?" पंडित जी बोले- नहीं- नहीं, भागवत के अलावा और कोई उपाय मुझे नहीं दिखता| फिर सोचकर बोले- कुछ होगा तो चलो मैं आपको बताऊंगा। इसके बाद वह व्यक्ति चला गया|

मैंने भी कुंडली एक सरसरी निगाह से देख ली थी, जब वो पंडित जी के हाथ में थी| मैंने उसके जाने के बाद पण्डित जी से कहा- उस कुंडली में तो 'कालसर्प योग' था ही नहीं? पंडित जी बोले- नहीं उस कुंडली में था| मैंने कहा- आप कैसी बातें कर रहे हैं? जब राहु और केतु के मध्य में सारे ग्रह होते हैं, तब कालसर्प योग होता है| लेकिन उसमें तो कुछ एक ग्रह बाहर थे|

शायद पण्डित जी को उम्मीद नहीं थी कि मुझे ये देखना आता था| उसके बाद पण्डित जी ने बात भी घुमा दी| मेरी भी आदत है कि मैं कभी किसी का क्लाइंट नहीं बिगाड़ता| ...तो एक तरह से वो व्यक्ति पंडित जी का क्लाइंट ही था| अब उसकी गलती थी| वह पंडित जी के सामने था और फिर मैंने उसे कुछ नहीं कहा और न ही उससे मिलकर सच बताने की कोशिश की। मुझे लगता है कि जब से चीजों का बाजारीकरण हुआ है, जब से जरूरतों की जगह ख़्वाहिशों ने ले ली है, तब से आदमी आदमी का दुश्मन बन गया है|

कई बार मेरे पास लोग आते हैं, जो बोलते हैं कि हमको तो ज्योतिषी ने यह बताया है, हमें वह बताया है| तो मैं उन्हें यही कहता हूँ- ठीक है, अगर आपको बताया है तो आपको कुछ दिन, कुछ महीने उन पर विश्वास करना चाहिए| आप उनकी कही हुई बात को ही फॉलो कीजिए| ऐसा भी हो सकता है कि वह ज्यादा ज्ञानी हो| उनका जीवन देखने का नजरिया अलग हो या ये भी हो सकता है उनका बताया उपाय घातक हो और जातक को ऐसी ठोकर लगे कि अगली बार के लिए अक्ल आ जाये।

नोट :- कालसर्प दोष नहीं होता, कालसर्प योग होता है| इसके फायदे भी होते हैं।

ज्योतिष, लॉक प्रोफाइल और राहु

कुछ लोग मेरे पास आते हैं और वह लोग कहते हैं कि वह काफी तनाव में जी रहे हैं| मानसिक शांति नहीं मिल पा रही है| जब मैं उनकी फेसबुक प्रोफाइल चैक करता हूँ तो ज्यादातर मामलों में उनकी प्रोफाइल में लॉक लगा हुआ होता है और उनके बारे में कोई जानकारी नहीं दिख रही होती है। मैं उन्हें कहता हूँ कि जो आपने प्रोफाइल में लॉक लगा रखा है, वो भी इसका प्रमुख कारण हो सकता है।

राहु की वजह से जातक रहस्यमयी बनता है यानी अपने बारे में सब छुपाने वाला और दूसरों के बारे में सब जानने वाला| राहु हमेशा व्यक्ति को बहुत अधिक सोचने का गुण देता है| जितने भी वैज्ञानिक शोध से जुड़े होते हैं या शतरंज आदि के खिलाड़ी, यहाँ तक कि संगीतकार भी वो कहीं ना कहीं राहु के प्रभाव में होते हैं।

सबसे कमाल की बात यह होती है कि कई बार महिलाएं/ लड़कियां जब यह सवाल लेकर आती हैं और जब मैं उन्हें कहता हूँ कि आपकी प्रोफाइल मे लॉक लगा हुआ है, यह राहु की वजह से हो सकता है और परेशानी की वजह भी यही हो सकती है| मुमकिन है कि कुंडली में चन्द्रमा- राहु या शनि- राहु- चन्द्र की कोई युति हो|

वो कहती तो नहीं, पर कई बार उन्हें ये लगता है मैं प्रोफाइल चैक करना चाहता हूँ, आदि| असल में ये जो शक उन्हें मन में पैदा होता है या जो व्यक्ति इसी शक की वजह से प्रोफाइल लॉक करता है, उसका कारक भी राहु ही है। राहु व्यक्ति को जीवन में असुरक्षा की भावना भी देता है| राहु से प्रभावित व्यक्ति सब कुछ बटोरना चाहता है, अपने पास रखना चाहता है और जितना बटोरता रहता है उतना ही परेशान होता रहता है ।

ज्योतिष से जुड़े तथा ज्योतिष में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को लॉक प्रोफाइल वाले मित्रों तथा परिचितों की कुंडली का अध्यनन करना चाहिए| मुमकिन है कि जन्म कुंडली या नवमांश में उन्हें चन्द्रमा राहु या शनि राहु चन्द्र की कोई युति नजर आये| इसके अलावा गोचर में बदलाव आने पर भी कुछ समय के लिए व्यक्ति प्रोफाइल लॉक या हवाट्सएप से डीपी हटा सकता है।

अब इसके उपाय पर भी थोड़ा बात करते हैं| जहाँ तक मेरी समझ है, हर युति के फायदे और नुकसान दोनों होते हैं। कई मामलों में राज परिवार में पैदा होने का नुकसान ये है कि व्यक्ति जरूरत पड़ने पर भी मजदूरी नहीं कर सकता और गरीब परिवार में पैदा होने का नुकसान ये है कि व्यक्ति अमीर होने के बाद भी उस समाज से नहीं जुड़ पाता| न ही वो उन्हें स्वीकार कर पाता है, न ही वो लोग उसे स्वीकार कर पाते हैं। इसलिए अगर व्यक्ति को इस युति की वजह से जीवन में नुकसान हो रहे हैं तो उसे समाज में सक्रियता बढ़ा देनी चाहिए| प्रोफाइल लॉक हटाकर हर दिन स्टेटस अपडेट करने चाहिए| नए लोगों से मिलना चाहिए| नए लोगों को पढ़ना चाहिए| अपने विचार रखने चाहिए।

कालसर्प योग के फायदे

जब राहु और केतु के मध्य सारे ग्रह होते हैं, तब जो योग बनता है उसे 'कालसर्पयोग' कहते हैं| हर सामान्य योग की तरह इसके भी फायदे और नुकसान दोनों ही हैं| लेकिन इसे प्रसारित इस तरह से किया गया है जैसे यह महा विनाशकारी योग है और इससे नुकसान ही नुकसान है। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी सही नहीं है| बड़े- बड़े सैन्य अधिकारी, बड़े-बड़े प्रशासनिक अधिकारियों की कुंडली में यह योग पाया जाता है।

अब्राहम लिंकन, जवाहर लाल नेहरू, डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन, सचिन तेंदुलकर, धीरूभाई अंबानी, आदि जैसे दर्जनों नाम हैं जिनकी कुंडली में कालसर्प योग है और ये कोई सामान्य लोग नहीं हैं और दूसरी बात इनकी सफलता में काफी हद तक कालसर्प योग का योगदान है ।

कुंडली में 12 भाव होते हैं और प्रत्येक भाव किसी ना किसी का कारक होता है| जब व्यक्ति की कुंडली में कालसर्प योग बनता है तो राहु और केतु के बीच सारे ग्रह आ जाते हैं और जैसा कि हम सब जानते हैं कि राहु केतु हमेशा खुद से सात घर दूरी पर होते हैं, ऐसी स्थिति में बाकी के भावों से व्यक्ति का सीधा-सीधा सम्बन्ध नहीं रहता| ....यानी वह अपने कार्य की ओर ज्यादा ध्यान देता है और यही योग जातक को अनुसाशन पसन्द बनाता है। मेहनत ही सफलता की कुंजी है तथा कुछ पाने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है| सैन्य अधिकारी या प्रशासनिक अधिकारी बनने की यही दो प्रमुख शर्तें भी हैं।

जो आदमी खुद अनुशासन में रहने वाला होगा, मेहनत करने वाला होगा, समय का पाबंद होगा तो वो कितने लोगों को पसन्द होगा? ये सोचने वाली बात है, क्योंकि वो बदले में सामने वाले से ऐसी ही उम्मीद करेगा| कुल मिलाकर आसान भाषा में कहें तो एक कसा हुआ जीवन होता है कालसर्प योग वाले जातक का।

कालसर्प योग अगर इतना अच्छा है तो फिर लोग इतना डरते क्यों हैं? ये सवाल भी काफी लोगों के मन में आ रहा होगा| ....तो इसका पहला कारण है उसका डरावना नाम काल+सर्प और दूसरा 1% जातक को भी ज्योतिष का ज्ञान नहीं होता| कुछ को होता भी है तो भी काफी चीजें मालूम नहीं होती।

कुछ छः सात महीने पहले मुझे कुंडली दिखाने के लिए एक महिला ने संपर्क किया| वो अपनी बेटी को लेकर चिंतित थी और बेटी की कुंडली के विषय में जानना चाहती थी। महिला ने मुझसे कुछ सवाल पूछे मैंने उन सवालों का उन्हें अपनी समझ के अनुसार उत्तर दे दिया और कुछ एक उपाय बताकर उन्हें कहा कि बाकी सब ठीक है| आपको घबराने की जरूरत नहीं है।

उन्होंने मुझसे कहा कि कुछ और बताना चाहेंगे आप?

मैंने लिखा- नहीं सब सही है।

उन्होंने यही सवाल मुझसे लगभग बदल- बदल के तीन- चार बार कहा तो फिर मैंने उन्हें कहा कि आप जो इस कुंडली में अंगारक योग (मंगल+ राहु) बन रहा है, उसके सम्बंध में जानना चाहती हैं? उन्होंने कहा कि आप एकदम सही कह रहे हैं।

मैंने कहा कि कोई योग पूरी तरह से अच्छा- बुरा नहीं होता| हर योग के फायदे नुकसान दोनों हैं और आपकी बेटी की कुंडली में जो अंगारक योग बन रहा है, उसे तो वैसे भी देवगुरु बृहस्पति देख रहे हैं| तो उसका तो फायदा ही मिलेगा।

उन्होंने कहा किस तरह? मैंने कहा- “मंगल रणनीति बनवाता है| राहु उस रणनीति को विस्तार देंगे और गुरु उसे सही दिशा देंगे| इस तरह सम्भव है, आपकी बेटी आर्मी में अफसर बने|”

तो उन्होंने कहा- “हाँ उस तरफ उसका झुकाव है।“

आप अगर 10 कालसर्प योग वाली कुंडलियों का अध्ययन करेंगे तो आप पायेंगे 9 जातक समय के पाबंद मेहनती और स्पष्टवादी होंगे| ....तो ऐसा जातक आसानी से किसी को वैसे भी पसन्द नहीं आता| एक बात और कही जाती है कि कालसर्प योग वाले जातकों का हर काम देर से होता है| ....तो आज के समय में हमारे जीवन में सब्र इतना कम रह गया है कि हमें हर काम देर से होता ही लगता है| जबकि सच्चाई ये है हर चीज समय पर ही होती है।

नवमांश क्या है, क्यों उपयोगी है?

ज्योतिष के षोडश वर्गों में सबसे महत्वपूर्ण वर्ग होता है नवमांश| कई बार जन्मकुंडली से भी ज्यादा नवमांश से जन्मकुंडली में दिख रहे ग्रहों का असल फल पता चलता है।

कई कुंडलियाँ मैंने देखी हैं जिसमें जन्मकुंडली में कोई ग्रह नीच का होता है तो इस हिसाब से उसके बुरे फल मिलने चाहिए| लेकिन नवमांश देखने पर पता चलता है कि वह ग्रह नीच का ही नवमांश पर भी बैठा है, तो ऐसी स्थिति में गृह वर्गोत्तम हो जाता है और वर्गोत्तम ग्रह उच्च ग्रह या स्वग्रही ग्रह के बराबर ही बलवान हो जाता है| ऐसी स्थिति में कुछ एक परेशानियाँ तो रहती है लेकिन उसके शुभ फल ही प्राप्त होते हैं।

इसे आसान शब्दों में इस तरह से समझा जाता सकता है कि जैसे हम कोई विशालकाय फलदार वृक्ष देखते हैं तो हमें लगता है, जिसका भी ये पेड़ होगा उसे खूब फल प्राप्त होंगे| लेकिन उसमें अनेक स्थितियाँ बन सकती हैं| ऐसा हो सकता है कि उस वृक्ष में फल ही नहीं आते हो| या दूसरी स्थिति में ऐसा भी हो सकता है कि बहुत विशालकाय पेड़ है, लेकिन जिन टहनियों में फल आये, वह किसी दूसरे के घर की ओर झुक गई और दूसरे जातक को उन फलों का लाभ मिल गया।

एक स्थिति ये भी हो सकती है कि जातक को कहीं बाहर जाना पड़ा और सारे फल एक रात में किसी ने चोरी कर लिए| ऐसी स्थिति में जो दूसरा व्यक्ति उस फलदार पेड़ को देखेगा, उसे तो यह लगेगा कि कितना विशालकाय पेड़ है| जरूर इसका मालिक जब इसका मौसम आयेगा तो बहुत फल खायेगा| लेकिन असल स्थिति यह है कि जितने फल जातक को मिलने चाहिए थे, उतने उसे उस पेड़ के कभी मिल नहीं पाये| जबकि उसका रख-रखाव में खर्चा हुआ सो अलग।

किसी जातक का ही काल्पनिक उदाहरण लें तो मान लीजिये कोई जातक है| जन्मकुंडली में बुध की स्थिति अच्छी नहीं है, जिसके कारण वो एलर्जी सम्बंधित समस्या से परेशान था| (क्योंकि बुध वाणी के साथ- साथ त्वचा का कारक भी होता है और खराब या कमजोर होने पर त्वचा/ एलर्जी सम्बन्धी दिक्कतें भी देता है।) लेकिन नवमांश में बुध उसी राशि में है, जिस कारण जातक का बुध वर्गोत्तम हो गया है और उस जातक ने भविष्य में कभी फ्लैट/ शहर बदला तो उसका पड़ोसी शहर का कोई मशहूर "त्वचा रोग विशेषज्ञ" बन गया और उसकी समस्या से उसे चमत्कारिक रूप से निजात मिल गयी| ...या उस जातक का ऐसे शहर में तबादला या प्रमोशन हो गया जहाँ वो एलर्जी वाले कारण ही मौजूद नहीं थे, तो सिर्फ उसकी जन्मकुंडली को देखकर किया गया आपका फलादेश गलत हो सकता है ।

बिना नवमांश के फल कथन करना अधूरा रहता है फलादेश के वक़्त कम से कम एक बार जातक के नवमांश का अध्ययन भी करना चाहिए ताकि सटीक के करीब का फलादेश किया जा सके| इससे हटकर एक बात ये भी है कि कुछ दैवज्ञ ऐसे भी होते हैं जो सिर्फ चेहरा देखकर एक भटके मन को राह दिखा देते हैं| उनसे मिलना एक अलग दैवीय अनुभूति होती है।

ज्योतिष जीवन और चन्द्रमा

अक्सर यह सवाल आता है कि कौन सा ग्रह बलवान होने से जीवन अच्छा होता है या कौन सा ग्रह ज्यादा फलदायक होता है? मेरा इसमें अपना मानना यह है कि जिस तरह एक भोजन थाल होती है, उसमें रोटी भी जरूरी है, दाल भी जरूरी है, चावल भी जरूरी है, बड़ा पुआ रायता भी जरूरी है और यहाँ तक कि चटनी/ आचार/ मिर्च भी जरूरी है| तभी आप भोजन का आनंद ले पाते हैं| किसी भी एक चीज को खाकर आपको क्षणिक आनन्द तो मिल सकता है लेकिन वो आनन्द स्थायी नहीं होगा।

ठीक इसी तरह जीवन में भी है सारी चीजें थोड़ी- थोड़ी होती हैं, तभी एक पूर्ण जीवन व्यक्ति व्यतीत कर पाता है। इसके साथ-साथ हर ज्योतिषी का भी अपना एक दृष्टिकोण होता है, अपना शोध अपना अनुभव होता है| इसका भी फलादेश के समय बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है। कुछ ज्योतिषी कहते हैं कि अगर केंद्र में गुरु है तो 5000 दोष कम कर देता है, इसलिए गुरु सबसे महत्वपूर्ण है| कुछ लोगों को लगता है कि मंगल बलवान है तो जातक पराक्रमी होगा और उस पराक्रम से जीवन में हर चीज पा लेगा| किसी को लगता है कि शुक्र बलवान होना चाहिए| शुक्र से वैभव होगा, पैसा होगा, तो चीजें उसको आसानी से प्राप्त होंगी क्योंकि कलियुग में पैसा ही सब कुछ है|

कुछ कहते हैं सूर्य सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि सूर्य ग्रहों का राजा भी है और इसी से प्रशासन में अच्छी पकड़ होती है आदि।

मुझे लगता है कि अगर कुंडली में चंद्रमा बलवान है तो शायद एक सुखमय संतोषी जीवन हो सकता है और संतोषी सदा सुखी कहा ही जाता है। संतोषी व्यक्ति जीवन की हर परिस्थिति को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ता रहता है, इसलिए शायद जीवन में संतोष होना जरूरी है। एक उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति है जिसका गुरु बहुत अच्छा है| वह बहुत पढ़ा लिखा है, अपने शहर में सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा| लेकिन अगर उसके और ग्रह फेवरेबल नहीं हैं तो वो उस ज्ञान का उपयोग नहीं कर पायेगा| मंगल कमजोर होगा तो वह शहर से बाहर निकलने का साहस नहीं कर पायेगा| कोई सवाल पूछेगा तो तर्क के साथ उसका जवाब नहीं दे पायेगा| शुक्र अच्छा नहीं होगा तो अपने ज्ञान से ख्याति नहीं प्राप्त कर पायेगा| राहु अच्छा नहीं होगा तो वह हर किसी से लड़ता- भिड़ता रहेगा और खुद को सही साबित करता रहेगा, आदि।

यानी एक अच्छा ग्रह होने के बावजूद उसे उसके फल तो मिले, लेकिन दूसरे ग्रहों का साथ न मिलने की वजह से वह जातक नाकामयाब ही रहा| मुमकिन है कुछ समय के बाद उसे दूसरों से जलन भी होने लगे| ये सोचकर कि यार मैं तो इतना ज्यादा काबिल हूँ, मैं तो ज्यादा इतना ज्यादा पढ़ा लिखा हूँ, लेकिन मैं अपने जीवन में कुछ उतनी सफलता नहीं प्राप्त कर पाया| लोग मेरी इतनी इज्जत नहीं करते हैं जबकि दूसरे लोग जो मुझसे कम-अक्ल हैं, कम पढ़े लिखे हैं, उनको ज्यादा सम्मान मिलता है।

इसके अलावा चंद्रमा मन का कारक भी है और अगर आप मानसिक तौर पर मजबूत हैं तो कोई भी परिस्थिति आपका बाल भी बांका नहीं कर सकती। हमने इतिहास की किताबों में पढ़ा है कि किस तरह महाराणा प्रताप ने घास की रोटी खाई, संघर्ष व कष्टमय जीवन गुजारा, लेकिन सर नहीं झुकाया| किस तरह पृथ्वीराज चौहान की आँखें फोड़ दी गई थी, लेकिन उसके बाद भी उन्होंने इच्छाशक्ति के दम पर अपने शत्रु का दमन किया, नाश किया| ऐसे एक नहीं अनेकों प्रेरणादायी प्रसंग उपलब्ध हैं।

जितना मैं ज्योतिष को पढ़ पाया, समझ पाया, जी पाया, उसके हिसाब से मुझे लगता है कि एक अच्छा बलवान चंद्रमा हो तो जीवन हजारों मुश्किलों के बावजूद भी काफी आसान होता है।

शुरुआत में हमने एक भोजन थाल का जिक्र किया था| ....और अगर जहाँ से हमने बात शुरू किया था, वहीं पर लौटें तो आप पायेंगे कि इतना सब स्वादिष्ट खाना खाने के बावजूद भी अगर आपको पानी ना मिले तो आपको तृप्ति नहीं मिलेगी।

कर्मयोग ज्योतिष और जीवन

एक रात लगभग ग्यारह साढ़े ग्यारह का वक़्त था| हल्द्वानी के हिसाब से लोग आधी नींद पूरी कर चुके होते हैं| मुझे मुम्बई की आदत थी तो मैं जगा हुआ था | तभी मेरा फोन बजा| अनजान नंबर था| मैंने फोन उठाया तो पता चला कि मेरे मुम्बई के ही एक मित्र का फोन आया था| लगभग 3 साल बाद।

जब मैंने फोन उठाया तो उसने बोला और कैसा है? मैंने कहा- बहुत बढ़िया| पूछा- तू कैसा है? उसने कहा बहुत हालत खराब है| मैंने कहा- क्यों क्या हुआ? तो उसने मुझे बताया कि मैंने कभी उसका हाथ और कुंडली देखी थी और उसे बताया था कि उसके जीवन में कोई लड़की आएगी और उसकी बहुत बदनामी होगी| उसे आर्थिक तौर पर बहुत नुकसान होगा और उसके सन्यास लेने के भी योग हैं।

उसने मुझे बताया कि कुछ समय पहले ही उसने एक लड़की से शादी की थी| जबकि कमाल की बात यह थी कि मुझे भी इस बारे में नहीं पता था कि उसने शादी कब की? तो, उसने मुझे बताया कि लगभग ढाई- तीन साल पहले शादी हुई और किन परिस्थितियों में उसका तलाक हुआ| साथ ही लड़की ने तलाक देने के लिए एक भारी अमाउंट उससे चार्ज की| इस सब की वजह से उसके आर्थिक सामाजिक और मानसिक तीनों नुकसान हुये।

मैं मुम्बई छोड़कर हल्द्वानी आ चुका था तो मेरा नम्बर भी बदल चुका था| उसने कहीं से मेरा नम्बर खोजा और मुझसे कहा कि भाई! तूने मुझसे कहा था कि मेरी कुंडली में सन्यास के योग हैं| मेरा मन भी सन्यास लेने का हो गया है, लेकिन मैं सन्यास नहीं लेता चाहता।

मैंने कहा अपना काम पूरी ईमानदारी से करना भी सन्यास ही है और सबसे बड़ा योग भी| वो चौंक गया बोला- कैसे? उसके लिए तो कुंडलिनी जागरण करना पड़ता है! मेरा दोस्त एक्टर था| ऐसा- वैसा भी नहीं, काफी अच्छा| इतना कि उसने एक हॉलीवुड प्रोजेक्ट तक किया था। मैंने उससे कहा- मुझे इतना तो कुंडलिनी जागरण के विषय में, मूलाधार चक्र, आज्ञा चक्र के बारे में नहीं पता| लेकिन ये जानता हूँ कि जब तू एक्टिंग करता होगा और उसमें भी अपना पसंदीदा किरदार, तो रिहर्सल से उसको निभा लेने तक तुझे भूख,प्यास,नींद नहीं लगती होगी| ....और जिस वक्त तू उस किरदार को निभाता है तो सामने वाले को भी यकीन दिला देता होगा कि डायलॉग बोलने वाला व्यक्ति तू नहीं है, बल्कि तेरा किरदार है। उसने कहा- हाँ ये तो है|

मैंने कहा- चक्रों को जाग्रत करके भी शायद नींद, भूख, प्यास खत्म हो जाती और आज्ञा चक्र जिसका जाग्रत हो जाता है वो सिद्ध पुरुष बन जाता है| यह प्रसिद्धि भी तो एक सिद्धि ही है| क्या अभिनेता प्रसिद्ध नहीं होते हैं/ उनके कुछ कहने पर उनके फैन्स बिना सोचे समझे उस काम को करने के लिए तैयार नहीं हो जाते हैं? उसने कहा- हो जाते हैं और उसकी स्थिति पहले से बेहतर थी| धीरे- धीरे उसके जीवन में चीजें सामान्य हो गयीं।

मेरा हर इस लेख को पढ़ने वाले व्यक्ति से कहना है कि ध्यान करना ईश्वर तक पहुँचने या ईश्वर को पाने का एक मार्ग है, लेकिन सिर्फ ध्यान करना ही एकमात्र मार्ग है ऐसा भी नहीं है।

जरूरी नहीं कि अपने अंदर की शक्तियों को जागृत करने या उनको पहचानने के लिए आपको ध्यान का ही सहारा लेना पड़े| अगर ऐसा होता तो भगवान श्रीकृष्ण गीता में तीन मार्ग (भक्ति मार्ग, ध्यान मार्ग और कर्म मार्ग) नहीं बताते। मौत के कुएँ में गाड़ी/ बाइक चलाने वाला व्यक्ति, बड़े पत्थर को मूर्ति में बदलकर उसमें जान डाल देने वाला व्यक्ति भी किसी योगी से कम नहीं है| इस तरह के कई लोग आपको आस- पास दिख जायेंगे, जो आँख बंद करके ध्यान तो नहीं कर रहे थे, लेकिन आँखे खोलकर अपना काम ध्यान से जरूर कर रहे थे।

अगर आप पूरे मनोयोग से कोई कार्य करेंगे तो सम्भव ही नहीं है कि आप उसमें सफलता ना पायें| लेकिन कई बार होता ये है कि हम काम किसी मजबूरी में कर रहे होते हैं, किसी दबाब में कर रहे होते हैं या फिर किसी लालच में|

इसलिए चाहते हुए भी अपना शत- प्रतिशत नहीं दे पाते हैं| अंत में बस यही कहूँगा कि कार्य का सफल या असफल होना इस बात पर निर्भर करता है कि हमारा उस कार्य को करने का उद्देश्य स्वार्थ है या परमार्थ।

ग्राफोलॉजी हस्ताक्षर विज्ञान

ग्राफोलॉजी यानी हस्ताक्षर विज्ञान, यह बहुत ही रोचक विषय है, जिसके बारे में काफी कम लोग अध्ययन करते हैं। इसके साथ समस्या ये है कि इसकी काफी कम किताबें उपलब्ध हैं और जो किताबें हैं वह भी ज्यादातर इंग्लिश में हैं| हिंदी में काफी कम लोगों ने इस विषय पर प्रमाणिकता के साथ लिखा है| खुद मेरे पास हस्ताक्षर विज्ञान की सिर्फ दो किताबें हैं, जबकि ज्योतिष से जुड़ी मेरे पास लगभग 20- 30 किताबें है।

हस्ताक्षर विज्ञान यानी ग्राफ़ोलॉजी को समझने के लिए पहले हमें व्यक्तियों को समझना पड़ेगा, फिर उनके व्यवहार को समझना पड़ेगा| उसके बाद ही हस्ताक्षर देखकर हम किसी व्यक्ति के बारे में बता सकते हैं।

कई बार जब मैं जातक को बोलता हूँ- “आप बर्थ डिटेल, दोनों हाथों की तस्वीर और हस्ताक्षर भेज दीजिये”, तो वो कहता है कि हस्ताक्षर क्यों? उनके मन में कई सवाल आते हैं यानी मानकर चलिए इस व्यक्ति के हस्ताक्षर राहु प्रधान होंगे| राहु प्रधान हस्ताक्षर घूमे हुए होते हैं यानी जिन्हें देखकर समझ नहीं आता, ठीक उस तरह जैसा राहु है। जिस व्यक्ति के हस्ताक्षर में काफी गैप होता है अधिकतर देखा गया है कि उसका स्वभाव वैरागी होता है और ऐसे हस्ताक्षर शनि प्रधान हस्ताक्षर कहलाते हैं| बेहद सुंदर बराबर हस्ताक्षर शुक्र प्रधान हस्ताक्षर कहलाते हैं।

ठीक इसी तरह हस्ताक्षर करने की गति, दिशा और दबाव भी जातक का किरदार बताते हैं| तेज गति के हस्ताक्षर जातक को जल्दबाज़, ऊपर की दिशा वाले हस्ताक्षर जातक को सकारात्मक, नीचे की दिशा वाले हस्ताक्षर जातक को नकारात्मक बनाते हैं। जिन हस्ताक्षरों में दबाब ज्यादा होता है उनमें जीवनशक्ति उतनी अधिक और वो लोग उतने ही हठी होते हैं| इसके विपरीत कम या हल्के दबाब वाले लोग कलात्मक होते हैं ।

हस्ताक्षर विज्ञान को आसान शब्दों में कहें तो किसी हस्ताक्षर को देखकर पहली बार में जो विचार आपने मन में आता है, व्यक्ति का व्यवहार वैसा ही होता है। लेकिन इसके लिए आपको अभ्यास करना पड़ेगा| अलग- अलग क्षेत्रों के लोगों के हस्ताक्षर देखने पड़ेंगे| वो हस्ताक्षर किस ग्रह का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं? ये भी समझना पड़ेगा| इसके बाद ही शायद आपकी बातें सही होने लगें ।

हस्ताक्षर में बदलाव करके कई बार व्यक्ति के व्यवहार में तेजी से परिवर्तन भी आता है| मैंने सैंकड़ों तो नहीं लेकिन दर्जनों मामलों में ऐसा देखा है| अगली बार किसी के हस्ताक्षर देखें तो याद रहें- हस्ताक्षर सिर्फ हस्ताक्षर नहीं है, हस्ताक्षर उस व्यक्ति के व्यवहार का आईना है।

विवाह गुण मिलान और ज्योतिष

विवाह जीवन का एक ऐसा निर्णय है, जिसका सफल/ असफल होना सीधे तरीके से जातक के जीवन को प्रभावित करता है। एक सफल वैवाहिक जीवन आपकी प्रगति की रफ्तार को बढ़ाता है और असफल वैवाहिक जीवन प्रगति की रफ्तार को भले ही न घटाए, मगर कुछ देर के लिए ही सही मंद जरूर कर देता है| ऐसा मेरा मानना है, वो इसलिए भी क्योंकि हमारी संस्कृति पाश्चात्य देशों की तरह नहीं है| हम भले ही अब संयुक्त परिवारों में न रहते हों, मगर कहीं न कहीं हम अभी भी संयुक्त परिवारों से ही जुड़े हुए हैं।

विवाह से पहले अक्सर गुण मिलाए जाते हैं और 36 में से 18 या उससे ज्यादा होने पर विवाह के लिए उत्तम बताये जाते हैं और विवाह संपन्न करा दिया जाता है| लेकिन सिर्फ गुणों के आधार पर हम ये नहीं कह सकते कि वैवाहिक जीवन सफल होगा या नहीं। पिछले कुछ समय से मैं इस पर शोध कर रहा था और मैंने पाया कि अधिकतर मामलों में अगर ग्रह मैत्री न हो, वर- वधू की आने वाली महादशा अनुकूल न हो, तब भी इसके गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ जाते हैं।

उदाहरण के तौर पर अगर दोनों का मंगल/ सूर्य उग्र है, दोनों में से कोई हठी स्वभाव छोड़ने को तैयार नहीं है, तो गुण मिलान के बावजूद समस्या आ सकती हैं| जिसे आज की भाषा में “ईगो क्लेसेश” कहते हैं। एक दूसरे उदाहरण में अगर दोनों का चन्द्रमा कमजोर है या लग्न बलवान नहीं है, तो ऐसी स्थिति में सम्भावना है कि ऐसे दम्पति किसी भी चीज को लेकर ठोस निर्णय न ले सकें और कई बार जरूरत से ज्यादा खर्चा कर लें, जिसको लेकर सम्भव है उन्हें बाद में पछतावा हो।

एक और प्रमुख बिंदु है जो मैंने काफी जन्मपत्रियों में देखा है| अगर पंचमेश की स्थिति दोनों की कुंडली में कमजोर होती है तो संतान सुख में कमी का योग बनता है, जिस वजह से दम्पति के जीवन का एक बड़ा हिस्सा दुःख सहते हुए बीत सकता है। दूसरे देशों की तुलना में हमारे देश में ऐसा होना सम्भव भी लगता है क्योंकि यहाँ ज्यादातर लोग विवाह ही सिर्फ संतानोत्पत्ति की वजह से करते हैं।

इस लेख को लिखने का उद्देश्य पढ़ने वाले के मन में किसी तरह का डर बैठाना या संदेह डालना नहीं, बल्कि जागरूक करना है| .....कि विवाह सम्बन्धी निर्णय लेते समय सिर्फ गुण मिलान को या लड़का/ लड़की कितनी अच्छी जॉब में है, कितना पैसा- प्रॉपर्टी है, को योग्यता का पैमाना नहीं मानना चाहिये।

मैंने कई ऐसे मामले देखे हैं जिनमें थोड़े से स्वार्थ/ फायदे की वजह से या "जिम्मेदारी निभानी है, जितनी जल्दी निभ जाए" वाली एप्रोच पर चलने की वजह से लोग न यहाँ के रहे न वहाँ के।

ज्योतिष और प्रीप्लांड बच्चे

मुझे हमेशा लगता है कि उम्मीदें दुःख का कारण बनती हैं और यहीं से इस लेख को शुरू करता हूँ। इस विषय पर उतना ज्यादा कभी लिखा नहीं गया, लेकिन जो लोग ज्योतिष से बहुत ज्यादा जुड़े होते हैं अक्सर इस विषय के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी रखते हैं। एलीट समाज में बच्चों के जन्म लेते समय इन चीजों का काफी ध्यान रखा जाता है कि उस समय ग्रहों की क्या स्थिति है? यह बहुत ही रोचक विषय है, लेकिन निजी तौर पर ये भी लगता है कि इसमें पड़ने वाला व्यक्ति अंत में ठगा हुआ ही महसूस करता है ।

सूर्य एक महीने तक एक राशि में रहते हैं| गुरु- शनि एक वर्ष से थोड़ा अधिक एक राशि में रहते हैं| इन तीन ग्रहों की स्थिति कुंडली में अगर अच्छी है तो कहा जा सकता है कि कुंडली अच्छी है। कई लोग डॉक्टरी सलाह के साथ ज्योतिषीय सलाह भी लेते हैं ताकि होने वाले बच्चे के ग्रह अच्छी स्थिति में हों और साथ ही डिलीवरी डेट में बदलाव भी करवाते हैं| लेकिन इसके अलावा भी बहुत से पहलू होते हैं, जिसके आधार पर ग्रहों के फल प्रभावित होते हैं।

एक पौराणिक कथा बड़ी प्रचलित है कि जब रावण की संतान होने वाली थी, उस वक़्त सारे ग्रह रावण की कैद में थे| ...तो रावण ने सभी ग्रहों से कहा कि आप सभी अपनी- अपनी अपनी उच्च राशि में चले जाओ या स्वग्रही हो जाओ। सभी ग्रह मजबूर थे, तो सभी ग्रह उच्च में और स्वराशि में चले गये| लेकिन उन्होंने न्याय के देवता शनि देव से प्रार्थना किया और कहा- जब रावण इतना ज्यादा दुष्ट है, उसने हमें इतना प्रताड़ित किया है, तो उसकी संतान के अगर सभी ग्रह बलवान होंगे तो वो हमें कितना परेशान करेगा? ये सुनकर शनि देव ने ग्यारहवें घर में तुला राशि (जो उनकी उच्च राशि है) में रहते हुए अपना एक पैर आगे निकाल दिया| जब रावण ने मेघनाथ की चलित कुंडली बनाई, तभी शनि बारहवें घर में वृश्चिक राशि में पहुँच गए और बारहवे घर में वृश्चिक राशि में बैठे शनि अकाल मृत्यु का कारण भी बनते हैं।

ये देखकर रावण ने शनि ग्रह की टांग खींच दी| तभी से शनि की चाल हल्की हो गयी और कहते भी हैं, “शनैः- शनैः चलते हैं शनि” और बाद में यही योग मेघनाथ की मृत्यु का कारण भी बना।

एक और बात जो ध्यान देने वाली है| वह यह है कि जन्मकुंडली के ग्रहों को व्यक्ति कुछ हद तक नियंत्रित कर सकता है, लेकिन नवमांश के ग्रहों को नियंत्रित कर पाना लगभग नामुमकिन है| .....और ये हम सभी जानते हैं कि फलादेश में नवमांश कुंडली कितनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है? साथ ही हर 13-14 मिनट में नवमांश कुंडली बदल भी जाती है।

जब मैं इस विषय पर शोध कर रहा था तो अंत में एक निष्कर्ष पर पहुँचा और वो निष्कर्ष था, “कोई लाख करे चतुराई कर्म का लेख मिटे ना रे भाई”|

ज्योतिषी अपना भाग्य क्यों नहीं बदलते?

एक सवाल अक्सर लोगों के मन में आता है या लोग कुतर्क भी करते हैं कि इतना बड़ा ज्योतिषी है तो अपना भाग्य क्यों नहीं बदलता? उसके जीवन में परेशानियाँ क्यों हैं? दुःख क्यों हैं?

इस सवाल के जवाब को एक लेख में समझ पाना और समझा पाना बहुत जटिल है| सबसे पहले तो सबसे बड़ी बात ये है कि दुःख और सुख आपके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है | जो भी घटना जीवन में आपके साथ घटती है, उसके फायदे और नुकसान दोनों होते हैं| ये आपके ऊपर है कि आप उसका कौन सा पहलू देख रहे हैं।

दूसरा संसार में हर चीज एक दूसरे से जुड़ी हुई है| मैं कई ज्योतिषियों से मिला हूँ, जिनके दुःख की प्रमुख वजह उनके दुःख नहीं, उनके प्रियजनों के दुःख थे| किसी को बेटे- बेटी की सरकारी नौकरी न लग पाने का दुःख था, तो किसी को उनकी शादी न हो पाने का। साथ ही जब व्यक्ति किसी व्यक्ति की तरक्की से जलने लगता है तो उसके जीवन में दुःखों की बाढ़ आ सकती है और ये तरक्की किसी भी तरीके की हो सकती है| आर्थिक तरक्की, सामाजिक तरक्की, आध्यात्मिक तरक्की आदि| जीवन को करीब से देखेंगे तो आप पायेंगे, आप किसी दूसरे व्यक्ति की वजह से ही दुःखी होंगे।

हर किसी की जीवन यात्रा एक अलग देश, काल, परिस्थिति से शुरू होती है| .....और आपके जीवन की सफलता-असफलता इस बात से तय होती है कि जहाँ से आपने यात्रा शुरू की थी, उस जगह से आप कहाँ पर हो या कहाँ तक पहुँचे| अक्सर, हम अपने जीवन की तुलना दूसरे के जीवन से करते हैं, इसलिए उदास रहते हैं| जबकि उसकी यात्रा शुरू ही अलग जगह से हुई होती है।

ज्योतिषी न अपना भाग्य बदलता है, न ही किसी और का भाग्य बदलता है| वो बस रास्ता दिखाता है और बुरे वक़्त में हिम्मत देता है| ज्योतिषी के द्वारा बताते गये उपाय भी जीवन में सकारात्मकता लाते हैं, धैर्य को बढ़ाते हैं| जिससे व्यक्ति के मन की उलझन कम होती है और उसे निर्णय लेने में आसानी होती है और जब व्यक्ति बिना उलझन कोई निर्णय लेता है, तो उसके सफल होने की संभावना बढ़ जाती है।

महान लोगों की कुंडलियाँ और ज्योतिष

जिस भी व्यक्ति की ज्योतिष में रूचि होती है, वह सबसे पहले अपनी कुंडली देखता है| अपनी कुंडली में बने हुए योगों को देखता है| उसके बाद वह महान लोगों की कुंडलीयाँ चेक करता है और उससे अपनी कुंडली को मिलाने की कोशिश करता है कि उसकी कुंडली में कौन- कौन से योग हैं? जो उसे महान बना सकते है। मुझे लगता है कि अमर हो जाना एक ऐसी चाहत है, जिसके लिए व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार हो जाता है|

कई बार मुझे यह भी लगता है कि इसकी वजह से व्यक्ति

वर्तमान का आनन्द ही नहीं ले पाता और जो सब कुछ भूलकर वर्तमान का आंनद लेते हैं, वह जरूर अमरत्व को प्राप्त होते हैं।

कुछ समय पहले मेरी एक मित्र के साथ, (जो शेयर मार्केट में ट्रेडिंग करता था और जिसकी ज्योतिष में भी थोड़ी बहुत रूचि थी) कुंडली के संदर्भ में बात हो रही थी तो उसने मुझे दुनिया के सबसे बड़े इन्वेस्टर वारेन बफेट की कुंडली दिखाई और मुझसे पूछा कि इस कुंडली में ऐसे क्या योग थे कि व्यक्ति इतना बड़ा इन्वेस्टर बना?

मैंने जब वारेन बुफेट की कुंडली देखी तो उसमें ऐसे कोई आश्चर्यजनक योग नहीं थे| आप कह सकते हैं कि जैसे एक सामान्य कुंडली होती है, वैसे ही कुंडली थी| बस नवमांश कुंडली में सूर्य वर्गोत्तम था। मैं इस विषय पर दो वजहों से बात करना चाह रहा था| पहली वजह है कि जो भी महान व्यक्ति है उसकी देश, काल, परिस्थिति कैसी थी? हमें ये भी समझना

चाहिये| जैसा कि मुझे बाद में मालूम चला कि वारेन बफेट के पिता अपने देश में मंत्री या फिर किसी प्रशासनिक अधिकारी की पोस्ट पर थे| .... तो जैसा कि मैं कई बार कहता हूँ कि आपकी यात्रा जहाँ से शुरू होती है, आप अपने जीवन की उन्नति को उसके हिसाब से देख सकते हैं|

अगर आप उस घर में पैदा हुए हैं जहाँ आप के सर पर छत भी नहीं है और आप दो- मंजिला

मकान भी बना लेते हैं तो मुझे लगता है कि आप अपने जीवन में सफल रहे| ..... और अगर आप किसी ऐसे घर में पैदा होते हैं जहाँ सभी लोग विद्यारूपी धन से परिपूर्ण थे| लेकिन आपने धन तो बहुत कमाया लेकिन उस विद्या को आगे नहीं बढ़ा पाये, तो मुझे लगता है आप असफल कहलायेंगे।

वारेन बफेट के केस में जब उनका जन्म ही ऐसे परिवार में हुआ, जो व्यक्ति प्रशासनिक अधिकारी या फिर मंत्री हो, तो मुझे लगता है कि काफी चीजें तो पहले ही आसान हो जाती है। दूसरा इसमें यह भी समझना होगा कि जितने भी महान लोग थे, क्या उनकी कुंडलियां हमें सही मिली हैं?

अभी हाल ही में ज्योतिष के सिलसिले में मुझे एक खिलाड़ी की कुंडली देखने को मिली| मुझे उस खिलाड़ी का नाम नहीं पता था| ये भी मालूम नहीं था कि वह खिलाड़ी की कुंडली थी| मैंने उसकी कुंडली में योग देखे तो उसकी कुंडली में एक अच्छा खिलाड़ी बनने के योग बहुत कम थे। बाद में मुझे बताया गया कि यह एक प्रसिद्ध क्रिकेटर की कुंडली है| जब मैंने उस कुंडली को देखा तो वह सिंह लग्न की कुंडली थी और वह जो क्रिकेटर था, उसके कोई भी गुण सिंह लग्न से मिलते जुलते नहीं थे| उसके गुण तुला लग्न, मीन लग्न और मिथुन लग्न से मिलते जुलते थे।

हमें दो चीजें समझनी होंगी| सबसे पहले कि जो कुंडली आपको मिली है, वह सही भी है या नहीं? दूसरा कि जिस भी व्यक्ति की आप कुंडली देख रहे हैं, उसकी देश, काल, परिस्थिति क्या थी? अगर आप जवाहरलाल नेहरु जी की बेटी की कुंडली देख रहे हैं यानी इंदिरा गांधी जी की कुंडली देख रहे हैं और उसमें बहुत ज्यादा खराब ग्रह एवं योग भी होंगे,

फिर भी वह उस जगह तक पहुँच जायेंगी, जहाँ तक शायद एक छोटे शहर की इंदिरा अच्छी किस्मत और पूरी कोशिशों के बावजूद भी ना पहुँच पाये| क्योंकि सक्षम के घर का वातावरण, अनुवांशिक गुण उनके मित्र, सगे- सम्बन्धी आदि यह सब चीजें उनकी मदद करेंगे ही करेंगे।

दूसरा वर्तमान में मैंने बहुत से ज्योतिषियों के साथ यह देखा है कि जब कोई घटना घट जाती है या जब उन्हें पता चलता है कि यह फलाने आदमी की कुंडली है, तो वह फिर उसमें योग बताने लगते हैं कि इस कुंडली में यह योग था| इस योग के कारण यह घटना घट गई है| मुझे लगता है कि एक ज्योतिषी का काम घटना घटने से पहले बताने का है, न कि घटना घटने के बाद| कोई घटना घटने के बाद तो हर कोई व्यक्ति बता देगा कि घटना क्यों घटी?

जो लोग ज्योतिष सीखना चाहते हैं, मेरी उन्हें सलाह है भूतकाल को भूलकर वर्तमान की घटनाओं पर बारीकी से नज़र रखें| यही से उन्हें भविष्य की घटनाओं के बारे में पता लगेगा| महान लोगों की कुंडलियां अध्यन के लिए सही हैं, लेकिन उन पर इतना विश्वास नहीं करना चाहिये| क्योंकि वह कितनी प्रमाणिक है? यह बात हम पक्के तौर पर नहीं जान सकते|

दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात हर काल में महान होने के योग बदल जाते हैं| अगर त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम महान थे, तो द्वापरयुग में माखनचोर, रणछोड़, कान्हा महान थे।

समय के साथ कितनी बदली है ज्योतिष?

हर चीज वक़्त के साथ कम या ज्यादा बदलती ही है| मेरा अपना मानना है कि टेक्नोलॉजी बदलते ही ज्योतिष पूरी तरह से बदल जाती है| योग वही रहते हैं लेकिन उनके फलादेश बदल जाते हैं।

ज्योतिष के अंदर "देश, काल, परिस्थिति" मेरा पसंदीदा विषय है| अपने अनुभवों के आधार पर मैं कह सकता हूँ, अगर कोई व्यक्ति जातक की "देश- काल- परिस्थिति" का अनुमान लगा ले तो यकीन मानिये, उसे उसकी कुंडली देखने की भी कोई जरूरत नहीं।

देश, काल, परिस्थिति के आधार पर ज्योतिष कितनी बदली है? इसे इस तरह समझिये| आज से कुछ साल पहले तक जब मोबाइल कैमरे एडवांस नहीं थे, इंटरनेट सस्ता नहीं था, उसकी स्पीड कम थी, तो कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था कि "यूटूबर" या "व्लागर" बनना प्रोफेशन भी हो सकता है और कई लोग इससे लाखों कमा सकते हैं।

ठीक इसी तरह 50-60 के दशक के आस- पास लोगों की आठ- दस संताने होना सामान्य सी बात थी| वक़्त के साथ ये संख्या पाँच हुई, तीन हुई, उसके बाद दो होते हुए एक तक पहुँची| अब बड़े शहरों में कई लोग ऐसे देखने को मिल जाते हैं, जो सन्तानोपत्ति करना ही नहीं चाहते| वहीं दूसरी तरफ अभी भी गाँवों में ऐसे लोग होंगे, जिनकी पाँच- छः संतान होंगी| कुंडलियों में ग्रह वहीं हैं, उनसे बनने वाले योग वहीं हैं, फर्क बस देश, काल, परिस्थिति का है| जातक की प्राथमिकता का है, उसके दृष्टिकोण का है| ज्योतिषियों के लिए कुंडली देखकर जातक के भाई- बहनों की संख्या बताना या किसी की संतानें बता पाना उतना आसान नहीं रहा है|

मुझे लगता है कुंडली में जब लोग संतान सम्बन्धी सवाल लेकर आयें तो उसका उत्तर देने से पहले उनकी देश, काल, परिस्थिति और साथ ही उन्हें कोई स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या तो नहीं है? आदि चीजें जान लेनी या समझ लेनी चाहिए। इसमें एक बात बहुत महत्वपूर्ण गौर करने वाली है वह ये, ...कि ऐसा नहीं है कि वर्तमान समय में ऐसी कुंडलियों में संतान सुख नहीं है| आपने देखा होगा, कई लोग अनाथाश्रम में जाकर बच्चों को गोद लेते हैं, अपने खर्चे पर उन्हें पढ़ाते लिखाते हैं, तो एक तरफ से भले ही उनकी कोई जैविक संतान ना हो, लेकिन उनके जीवन में संतान सुख होता ही है।

"ज्योतिष विज्ञान" हमेशा ही सॉफ्ट टारगेट रहा है| कोई भी व्यक्ति आकर इसे निराधार बताकर चला जाता है| चाहे उसने इसका रत्ती भर भी अध्ययन न किया हो| वही लोग अक्सर कुतर्क करते हैं- "पहले के समय में तो 16 की उम्र में शादी हो जाती थी| 25 की उम्र तक पहुँचते- पहुँचते चार- पाँच बच्चे| ....तो क्या अब ये योग खत्म हो गए हैं ?"

इसे इस तरह से समझने की कोशिश कीजिये कि पहले के समय में हर किसी का विवाह 16 की उम्र में ही नहीं होता था| दूसरा शास्त्रों के अनुसार विवाह आठ प्रकार के होते हैं- ब्रह्म, दैव, आर्य, प्राजापत्य, असुर, गन्धर्व, राक्षस और पिशाच। आजकल के समय में भी कुछ लोगों के 15-16 वर्ष की उम्र में ब्रह्म विवाह न सही, लेकिन आठ विवाहों में से कुछ एक तरह के विवाह हो ही जाते हैं ।

मानसागरी का अध्ययन करते हुए मैंने पाया कि उसमें बहुत से योगों के विषय में बताया गया था| जैसे जंगल से गुजरते हुए सर्पदंश, चौपाये के द्वारा शिकार, डाकुओं के द्वारा लूट आदि| अगर हम इसे सिर्फ पढ़ेंगे तो जरूर सोचेंगे कि भला आजकल जंगल से कौन गुजरता है? सांप किसको काटता है? आदि| लेकिन अगर हम इन योगों को वर्तमान की परिस्थिति में ढ़ालकर देखेंगे, तो हम पायेंगे कि लोग "जंगल सफारी" पर जाते हैं| कई देशों में जानवरों को नशे के इंजेक्शन लगाकर लोग उनके साथ तस्वीरें भी खिंचाते हैं और कई बार इस सब में हादसे भी हो जाया करते हैं ।

ये ठीक है कि अब चोर/ डाकू सामने से आकर आपको नहीं लूटते, लेकिन ऑनलाइन फ्रॉड या किसी बात को लेकर ब्लैकमेल करना भी उसी सूची में आता है| बस देश, काल, परिस्थिति पूरी तरह से बदल चुकी है।

ज्योतिष और अहं ब्रह्मास्मि

अहं ब्रह्मास्मि की कई लोगों ने अपने- अपने हिसाब से व्याख्याएँ की हैं| मैं भी एक ज्योतिषी के दृष्टिकोण से इस पर अपनी बात रखना चाहता हूँ। जब कोई व्यक्ति "अहं ब्रह्मास्मि" कहता है तो उसका अर्थ होता है "मैं ही सृष्टि हूँ, मैं ही सब कुछ हूँ"|

इस वाक्य में अहम झलकता है| लेकिन, अगर इसी बात को व्यक्ति "ये सृष्टि मेरी है और मुझे इसका ख्याल रखना है, बेहतर बनाना है" कहे, तो इसमें एक समर्पण की झलक दिखती है।

देखा जाये तो यही सच्चाई भी है| परमपिता परमेश्वर ने हर व्यक्ति को सृष्टि का मालिक बनाकर भेजा है, किन्तु हम हमेशा इससे अनजान रहते हैं।

इस दुनिया में जितने लोग हैं, दुनिया के अंदर उतनी ही दुनिया हैं| ....यानी आपका सूर्य सिर्फ आपका सूर्य है| वह आपके जन्म के साथ उगा है और आपकी मृत्यु के साथ ढल जायेगा| आपका चंद्रमा/ मंगल/ बुध/ गुरु/ शुक्र/ शनि/ राहू/ केतु सिर्फ आपके हैं| ये सारे ग्रह आपके साथ ही उदय हुए हैं और आपके साथ ही ढल जायेंगे। यही वजह है कि पूरी दुनिया में दो लोगों की कुंडली कभी एक सी नहीं होती| हर कोई अपने आप में कमाल, लाजवाब है| बस, जरूरत है खुद को पहचानने की और निष्काम भाव से कर्म करते हुए, अपना शत- प्रतिशत देने की।

कोई अच्छा नहीं है, कोई बुरा नहीं है| ये बात थोड़ी दार्शनिकों वाली लगती है, मगर यही सच्चाई भी है| सोचकर देखेंगे तो आप पायेंगे कि बुरे से बुरे व्यक्ति ने जो काम किया, उससे भी कोई अच्छी बात निकल आयी होगी| जो व्यक्ति हमारी नजरों में बुरा था, जिसे जीने का हक नहीं था, वो भी किसी की नजरों में हीरो था| लोग उसके लिए भी लम्बी उम्र की दुआएं कर रहे थे।

जैसे एक खेल होता है न, जिसमें टुकड़े जोड़- जोड़कर एक पूरा चित्र बनाया जाता है और वो टुकड़े अकेले देखने में बहुत अटपटे से लगते हैं| ठीक उसी तरह सृष्टि में भी हर अटपटे टुकड़े की जरूरत है| वह भी सृष्टि को पूर्ण कर रहा है| सम्भव है कि जो आपकी नजरों में अटपटा हो, वही दूसरे की नजर में एकदम सही हो और जो आपकी नजर में सही हो, वही दूसरे की नजर में अटपटा।

पाप-पुण्य भी आपके दृष्टिकोण के ऊपर ही हैं| मेरा मानना है कि अगर आप प्रत्यक्ष तौर पर किसी को नुकसान पहुँचा रहे हैं तो वह पाप हो सकता है, वरना आप तरक्की करेंगे तो आपको छोड़कर लगभग हर किसी को बुरा ही लगेगा। चिड़ियाँ फल चुराती है, जानवर दूसरों के खेत चर जाते हैं, वकील झूठ बोलते हैं, सेना के जवान दुश्मनों को गोली मारने से पहले एक पल नहीं सोचते, तो कैसा पाप? अगर वजह ठीक लग रही है तो पाप- पुण्य कुछ भी नहीं, सब कर्म है।

अंत में, मैं बस यही कहना चाहता हूँ कि परमपिता परमेश्वर ने आपको सृष्टि सौंपी है, तो कोई ऐसा काम तो करके ही जाइयेगा| ....ताकि जब उससे मुकालात हो, तो कम से कम नजरें मिला सकें और कह सकें कि मैंने सृष्टि पहले के मुकाबले और बेहतर बनाया| ....ताकि परमपिता परमेश्वर मन ही मन कह सकें कि इसीलिए तुम्हें भेजा था| तुम अपनी परीक्षा में पास हुए।

योग, दोष और ज्योतिष

मुमकिन है ज्योतिष के जानकर इस बात से बिल्कुल भी सहमत न हों, लेकिन मुझे लगता है कि कुंडली में बनने वाले योग प्राकृतिक हैं और दोष कृत्रिम है, मानव के द्वारा बनाए हुए।

अगर एक व्यक्ति महाधूर्त भी है तो वह पूरी दुनिया के लिए धूर्त हो सकता है, किन्तु खुद के लिए नहीं| .....और दुनिया में भी जरूरी नहीं कि वह हर व्यक्ति के लिए धूर्त ही हो| उसके भी कुछ अपने मित्र होंगे, उसके भी कुछ प्रियजन होंगे, उसके भी कुछ ऐसे लोग होंगे, जिनकी वजह से वो धूर्तता करके जीवनयापन कर रहा होगा।

मेरा अपना मानना यह है कि आपकी कुंडली में जो भी ग्रह या युतियाँ बनती हैं, वह आपकी रक्षा के लिए ही बनती हैं, ताकि आप विपरीत परिस्थितियों में भी अपना जीवन आसानी से जी सकें।

कई बार आपने देखा होगा किसी व्यक्ति के साथ कोई हादसा हो जाता है वह उस हादसे के लिए भगवान को बहुत ज्यादा कोसता है| ..... लेकिन 5 साल बाद, 10 साल बाद, 15 साल बाद या 20 साल बाद जब वह उस घटना के प्रभाव से पूरी तरह बाहर निकल आता है और उसके साथ कोई बहुत अच्छी घटना घटती है, तब वह फिर से सोचता है तो पता चलता है कि उस घटना की वजह से ही उसके जीवन में काफी बदलाव आया| अगर वह बुरी घटना नहीं घटती तो मुमकिन है वो वहाँ नहीं होता, जहाँ वह अभी है।

कुछ युतियों के आधार पर इसे समझने की कोशिश करते हैं| चंद्रमा जब भी राहु, केतु या सूर्य के साथ युति बनाता है तो ऐसा व्यक्ति बहुत अधिक सोचने वाला होता है| उसे छोटी- छोटी बातों पर गहन चिंतन की आदत या टेंशन लेने की आदत होती है| .....लेकिन आप पायेंगे कि जितने भी महान वैज्ञानिक हुए हैं, जिन्होंने भी नई खोजे की हैं, वह इसलिए खोज पाये क्योंकि उन्होंने किसी चीज को लेकर गहन चिंतन किया।

चंद्रमा के साथ केतु की युति व्यक्ति को बहुत ज्यादा भावुक और दयालु बनाती है| यूँ तो यह एक तरह से ग्रहण योग भी है, लेकिन अगर आप इसका सकारात्मक पहलू देखेंगे, तो आप पाएंगे जितने भी अच्छे कलाकार हुए हैं या जितने भी अच्छे डॉक्टर और नर्स हुई हैं उनका एक मानवतावादी पहलू जरूर होता है| उस गुण के होने से ही वह समाज के हर तबके के व्यक्ति के साथ एकदम जुड़ते हैं और यही गुण उनकी सफलता का कारण बनता है।

यूँ तो मांगलिक योग (जिसे दोष बोलकर काफी डराया जाता है) पर एक अलग से लेख लिखा जा सकता है, मगर मेरी कोशिश रहेगी कि कम से कम शब्दों में उसने बेहतर तरीके से समझाया जा सकें | इसे इस तरह से समझा जा सकता है कि अगर किसी जातक के सातवें या आठवें भाव में मंगल होता है तो उसे क्रमशः सप्तमंगली एवं अष्टमंगली कहा जाता है| ऐसा जातक जीवनसाथी के लिए अच्छा नहीं समझा जाता लेकिन इसका सकारात्मक पहलू यह भी है कि जिसके सातवें भाव में मंगल होता है, उसका मंगल सातवी दृष्टि से लग्न को देखता है और ऐसा व्यक्ति दृढ़ निश्चय ही होता है| वह जो ठान लेता है वह करके ही रहता है| जब जातक के आठवें भाव में मंगल बैठता है तो वह उसके तीसरे भाव यानी पराक्रम भाव देखता है| ऐसा व्यक्ति बहुत ज्यादा पराक्रमी (संघर्षशील) होता है| वह किसी भी तरह की परिस्थितियों में हार नहीं मानता।

मैंने ऐसे बहुत से लोगों को अपने निजी जीवन में देखा है जो मांगलिक थे| .....लेकिन उनका विवाह मांगलिक व्यक्ति से नहीं हुआ, फिर भी आज वह एक सुखमय वैवाहिक जीवन जी रहे हैं| वहीं दूसरी तरफ मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानता हूँ, जिनके गुण बहुत ज्यादा मिले, लेकिन उनका वैवाहिक जीवन बहुत ही ज्यादा बदहाल है।

दोष और योग ज्यादातर आपकी दृष्टि पर भी निर्भर करता है| अगर आपका चीजों को देखने का तरीका सकारात्मक है तो आपको हर जगह अच्छी चीजें दिखेंगी| अगर आपका चीजों को देखने का तरीका नकारात्मक है तो आपको हर जगह गलत चीजें ही दिखेंगी| पहलवान का बेटा अगर म्यूजिक टीचर बनना चाहें तो पहलवान को लगेगा

इसकी कुंडली में कोई दोष है, उसी तरह अगर एक म्यूजिक टीचर का बेटा पहलवान बनने का सपना देखे, तो उसे लगेगा उसकी कुंडली में कोई दोष है।

भगवान के मास्टर प्लान पर भरोसा कीजिये, वह जो करते हैं आपके भले के लिए ही करते हैं| भगवान का आशीर्वाद हो तो 16 वर्ष की आयु लिखाकर लाने वाला बालक मार्कण्डेय भी मार्कण्डेय ऋषि बनकर यश पाते हैं, इतना यश कि इतने युग बीतने के बाद भी बच्चों की दीर्घायु के लिए बच्चों के जन्मदिन पर मार्कण्डेय पूजा करवाई जाती है|

कुछ केस स्टडीज

केस स्टडी- 1

एक मित्र से ज्योतिष सम्बन्धी बात हो रही थी| उनकी रुचि ज्योतिष से ज्यादा तंत्र- मंत्र में थी| थोड़ी बातचीत होने पर वह बोले कि तंत्र- मंत्र सही चीज है| मैं चीजों को महसूस कर लेता हूँ| मैंने उनसे कहा, ये वही लोग महसूस कर पाते हैं जिनका चंद्रमा राहु के साथ होता है या केतु के साथ, या फिर शनि के साथ, या इन तीनों से किसी तरह का सम्बन्ध (मुख्यतः राहु) होता है| मैंने कहा, मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि आपकी कुंडली में ऐसा कोई योग बन रहा होगा। उन्होंने कहा- नहीं- नहीं, ऐसा तो कुछ नहीं है। मैंने कहा फिर भी चेक कीजिये| ....तो पहले उन्होंने जन्म कुंडली देखी| जन्म कुंडली में चंद्रमा के साथ ऐसा कोई सम्बन्ध सीधे- सीधे नहीं दिख रहा था, जिसके फलस्वरूप कहा जा सके कि उनकी रुचि तंत्र विद्या में हो और उन्हें आभास भी होते हों| फिर मैंने उनसे उनकी नवमांश कुंडली देखने को कहा और वहाँ उनके चंद्रमा को सीधे- सीधे राहु देख रहा था।

मैं यह नहीं बताऊँगा कि कौन सा ग्रह कहाँ पर था? क्योंकि यह बहुत ही निजी जानकारी हो जाएगी और मैं यह भी नहीं कहता कि कौन सी चीजें सही है और क्या गलत है? तंत्र विद्या गलत है या सही है? इस बहस में भी मुझे नहीं पड़ना| मैं बस अपनी बात रखना चाहता हूँ और चन्द्रमा पर राहु/ केतु/ शनि के प्रभाव बताना चाहता हूँ| ये दूसरे ग्रहों की स्थिति पर भी निर्भर करेगा कि हर किसी को ऐसे प्रभाव मिलें या ना मिलें।

केस स्टडी- 2

कुछ महीने पहले मैंने अपने एक करीबी की कुंडली देखी| मैंने उन्हें शनि से जुड़े उपाय बताये| हर बार की तरह मैंने सात्विक उपाय पहले बताया| मैंने कहा- “आपको हर दिन शाम के वक़्त शनि मंदिर जाकर सरसों के तेल का दिया जलाकर आना है।“

सामने से जवाब आया- "वक़्त ही कहाँ हो पाता है?"

मैंने कहा- “चलिए कोई बात नहीं| आप गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ा भी सकते हैं|”

सामने से जवाब आया- "घर वाले इसकी इजाजत नहीं देंगे"

मैंने कहा- “नीलम तो बहुत महँगा है, आप नीली धारण कर लीजिए| वो भी लाभकारी हो सकती है, शायद आपको आपकी परेशानी से मुक्ति मिल जाये।“ इसका बहुत ही रोचक जवाब मुझे सुनने को मिला- "मैं ऐसे अंधविश्वासों को नहीं मानता|"

नोटः- समस्याओं का समाधान हर कोई चाहता है, पर उपाय कोई नहीं करना चाहता| फिर चाहे वो मुफ्त के ही क्यों न हों।

केस स्टडी- 3

एक कहावत मुझे बहुत अच्छी लगती है- 'कुछ नाम के रिश्ते होते हैं, कुछ रिश्तों के नाम नहीं होते|" दरअसल इसका जिक्र इसलिए भी जरूरी था, क्योंकि ये केस इसी कहावत के इर्द- गिर्द घूमता है।

एक कुंडली देखी| उस कुंडली को देखते ही ऐसा लगा कि उनका वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं है| .....और यहाँ तक भी संभावना थी कि उनका तलाक हो सकता है। अमूमन ऐसे मामले जब भी सामने आते हैं या मुझे ऐसी किसी बुरी चीज का पता चलता है तो मैं सीधे- सीधे नहीं कहता| लेकिन घुमा-फिरा कर कन्फर्म जरूर करता हूँ, ताकि मेरी भी जानकारी बढ़ जाये| सामने वाले को तकलीफ न हो और भविष्य में ऐसा कोई मामला आये तो कम समय में उसे बेहतर उपाय बताया जा सके। कुंडली देखकर एक दो बातें बताने के बाद मैंने उनसे सवाल किया कि आपका वैवाहिक जीवन सही चल रहा है?

उन्होंने कहा, एकदम बढ़िया चल रहा है| मैंने एक बार फिर से सवाल किया- "क्या आप साथ में रहते हैं ?"

उन्होंने कहा- "हाँ, हम दोनों साथ में रहते हैं|"

मैं आगे बढ़ गया, फिर मैंने सोचा कि क्यों इस मामले को तूल देना और फिर मैंने इस तरह का कोई सवाल नहीं किया| लेकिन कुछ देर बाद मुझे पता चला कि पति- पत्नी दोनों साथ में रहते हैं, लेकिन उनकी माँ उनके साथ नहीं रहती। पत्नी अपनी माँ के घर रहती है और वह घरजमाई बनकर रहते थे| ....तो आप खुद सोचिये कि यह कैसा वैवाहिक जीवन की चल रहा होगा? मैं ये नहीं कहता कि घरजमाई बनना गलत है, न ही ये कहता हूँ कि लड़की का अपनी माँ के यहाँ रहना गलत है| लेकिन ये जरूर कहता हूँ कि किसी घटना के घटने की वजह अगर सकारात्मक नहीं है तो वो घटना गलत ही है। छोटे बच्चों को क्या दादा- दादी का प्यार मिलेगा? उन बच्चों की मनःस्थिति पर क्या प्रभाव पड़ेगा भविष्य के लिए ? समाज में बच्चों से कितने मुश्किल सवाल पूछे जायेंगे ?

ख़ैर, ये सब सवाल व बातें ज्योतिष से जुड़ी जरूर हैं, लेकिन "समाजशास्त्र" की बातें ज्यादा हैं| मैं इनमें भी उलझना नहीं चाहता कि क्या गलत है या क्या सही है? मेरी नजर में सब सही ही होता है, कुछ गलत नहीं होता| आपका 9 मेरा 6 हो सकता है और मेरा 9 आपका 6 | बात ये है कि वैवाहिक समस्याओं के प्रमुख कारण क्या होते हैं या मैंने किस आधार पर ऐसा कहा? दरअसल सातवाँ घर जीवनसाथी का होता है और जब उसमें दो या दो से ज्यादा क्रूर ग्रह बैठे होते हैं और दूसरा घर जो कुटुम्ब स्थान होता है, वह भी क्रूर ग्रहों के प्रभाव में होता है तब वैवाहिक जीवन में कुछ समस्याएं हो सकती हैं ।

नोट:- निष्कर्ष इसके अलावा भी काफी और बातों पर निर्भर करेगा| ये भी सम्भव है कि उपरोक्त योग होने के बावजूद सब कुछ एकदम सही रहे और ये भी सम्भव है कि उपरोक्त योग न होने के बावजूद समस्याओं का सामना करना पड़े।

उसके लिए आपको गहनता से ज्योतिष का अध्ययन करना पड़ेगा और उसे समझना पड़ेगा।

केस स्टडी- 4 और 5

मुम्बई में मेरी कम्पनी और रूममेट्स में बहुत कम ही लोगों को पता था कि मैं हाथ देखता हूँ या कुंडली देखता हूँ| मैंने कभी बताया ही नहीं| कुछ दोस्तों को बातों- बातों में पता लग गया था| ज्योतिष और पराविद्याओं का एक नियम है| उस नियम के अनुसार जहाँ आपको लगता है कि लोग इस पर विश्वास नहीं करेंगे, वहाँ आपको मौन रहना चाहिए और जब तक कोई सलाह न माँगे या बहुत जरूरी न हो, तब तक आपको कुछ कहना भी नहीं चाहिए। मैं हमेशा इन नियमों और इस जैसे कई नियमों का पालन करने की कोशिश करता हूँ।

एक बार कंपनी के कुछ दोस्तों को पता चल गया है कि मैं हाथ देखता हूँ तो उन्होंने अपना अपना हाथ दिखाया| मैंने उन्हें दो तीन चीजें बतायी| फिर उसके बाद एक रोचक हाथ देखने को मिला| उसकी खासियत यह थी कि उसको देखकर लग रहा था कि उस जातक के पास काफी सारी जमीन है। इसी पल से इस फलादेश की रोचकता शुरू होती है| क्योंकि अगर आपके पास मुंबई में बहुत सारी जमीन होती तो यह संभव था कि वह जॉब नहीं कर रहा होता| या तो वो बहुत बड़ा बिजनेसमैन होता या बिल्डर वगैरह| लेकिन उस व्यक्ति के हाथ में काफी सारी जमीन मुझे दिख रही थी, तो मैंने उसका हाथ गौर से देखा और पूछा- "क्या तुम्हारी गाँव में बहुत सारी जमीन है"?

वो एकदम चौंक गया| उसने पूछा- तुम्हें कैसे पता? मैंने कहा- तुम्हारे हाथ में दिख रहा है।

दूसरा केस भी रोचक था और शायद थोड़ा जटिल भी| कंपनी में काम करने वाला एक दोस्त कुछ वक्त पहले घर से लौटा था और उसने हमें पेड़े खिलाए थे| उसने बताया था कि घर के बने पेड़े हैं, उसकी माँ ने भेजे हैं| फिर उसके बाद यह आयी गयी बात हो गयी। उसके कुछ समय बाद जब इसी तरह ज्योतिष की बातचीत चली और कुछ लोगों को पता चला कि मैं थोड़ा- बहुत हाथ देखता हूँ, तो उस व्यक्ति ने भी अपना हाथ दिखाया| उसके हाथ में माता की रेखा ही नहीं थी| मतलब उसके हाथ को देखकर साफ पता चल रहा था कि उसके हाथ में माँ का सुख नहीं है।

अगर मैंने उसकी मम्मी के दिए हुए पेड़ नहीं खाए होते तो मैं जरूर घुमा फिराकर ही सही माता के स्वास्थ्य या माता जी हैं या नहीं? ये जरूर पूछता| लेकिन मुझे पेड़े वाली बात याद आ गई और मैंने उससे कहा- “मुझे लगता है, आप बहुत कम उम्र में अपने घर से निकल गये होगे| ...या तो पढ़ाई के सिलसिले में या किसी और सिलसिले में और आप कभी भी अपनी माता के निकट नहीं रह पाये होंगे? वो जातक असल में आठवीं के आस- पास घर से निकल गया था और अभी तक घर से बाहर ही था| ...तो देखा जाये तो दूसरी तरह से यह बात सही थी| उसे माता का सुख नहीं मिल पाया तो क्या होना? क्या नहीं होना?

इसीलिए मैं हमेशा कहता हूँ कि ज्योतिष की यात्रा में भगवान की कृपा के साथ- साथ आपको देश, काल, परिस्थिति का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिये| इन दोनों के बगैर आपकी ज्योतिष धरी की धरी रह जायेगी।

केस स्टडी- 6

ये एक ऐसा फलादेश रहा, जो था तो बुरा, लेकिन मेरे लिए और दूसरे लोगों के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था और दोबारा इतना सटीक फलादेश शायद हो भी नहीं पाया।

मैं अपने एक भाई जैसे मित्र के साथ अपने किसी जानने वाले के घर गया था| उन्हें पता था कि मैं कुंडली देखता हूँ| उन्होंने अपनी बेटी की कुंडली मुझे दिखाई और मुझसे कहा कि इसकी शादी नहीं हो रही है| बात बनते- बनते टूट जा रही है| इसकी शादी कब तक होगी?

उसी दौरान मैंने कुंडली में कोई भी चीज कब घटित होगी? इसका मोटा- मोटा अनुमान लगाना सीखा था और मैं जिस व्यक्ति के साथ गया था, उसे ज्योतिष में बिल्कुल भी विश्वास नहीं था| उसे लगता था कि यह सब फालतू की चीजें हैं। मैं बैठा और उन्होंने कुंडली मेरी तरफ बढ़ा दी| मैंने वह कुंडली देखी और जिससे हम थोड़ा- बहुत घटना कब घटित होगी? उसके बारे में बता सकते थे वाली विधि के सहारे बिना महादशा देखे, बिना अंतर्दशा देखे, भगवान का नाम लेकर कहा कि यह शादी फिलहाल तो नहीं होगी| लगभग डेढ़ साल बाद होगी और घर से बहुत दूर होगी| उसके बाद मैं वहाँ से चला गया।

अगले दो या तीन हफ्ते के बाद जो व्यक्ति मेरे बगल में बैठा था, उसका मुझे फोन आया| उसने मुझसे कहा- "तेरे लिए एक अच्छी खबर है और एक बुरी खबर है|... पहले कौन सी सुनेगा?" मैंने कहा- "भाई कोई भी खबर अच्छी नहीं थी होती और कोई भी ख़बर बुरी नहीं होती| जो मर्जी बता दे|" उसने कहा कि बुरी खबर यह है कि तूने कहा था कि उस जातक (लड़की) की शादी डेढ़ साल बाद होगी| उसकी शादी तय हो गई है, दो महीने बाद उसकी शादी है। ...तो मैंने कहा बुरा क्या है? ये तो अच्छी खबर है| भविष्यवाणी गलत होकर किसी की जल्दी शादी होना तो अच्छी खबर ही है।

इसके बाद उसने कहा- “अच्छी खबर यह है कि उसकी शादी घर से बहुत दूर हो रही है| उसने किसी दूसरे स्टेट के एक शहर का नाम बताया| मैंने कहा– “अच्छा, यह भी सही है|” मुझे आज भी याद है, मैंने बस उससे इतना कहा - "अभी हुई तो नहीं है न ?"

.....और आप यकीन नहीं करेंगे| शादी की सारी तैयारियाँ हो चुकी थी| जितना कुछ होता है और न जाने क्या चीजें घटित हुई कि वह शादी उस जगह नहीं हो पायी और फिर डेढ़ साल बाद, घर से दूर, दूसरे शहर में, किसी दूसरे प्रदेश में हुई।

बहुत से केसों में मैंने देखा है कि बारहवें घर में शनि हो, तो शादी घर से काफी दूर होती है| इसका लॉजिकल कारण ये हो सकता है कि तीसरी दृष्टि से शनि दूसरे घर को देखता है| दूसरा घर पैतृक आवास का होता है और शनि/ राहु/ केतु वैराग्य के घोतक होते हैं।

कुंडली देखकर समय का पता कैसे करें? इसका एक तरीका तो दशा/ महादशा/ अंतर्दशा वाला है| दूसरा तरीका जो मैंने कहीं पढ़ा था और ऊपर वाले केस में अप्लाई किया, वो था कि दूसरे घर को पहला साल मानिए और वहाँ से दाई तरफ को बढ़ते रहिये| जैसे पहले को दूसरा साल, बारहवें को तीसरा साल, ग्याहरवें को चौथा साल, आदि।

केस स्टडी- 7

आज एक व्यक्ति ने फेसबुक पर मुझसे व्हाट्सएप नंबर मांगा और उसके बाद मुझे मैसेज भेजकर मेरी थोड़ी तारीफ की| जैसे- आप बहुत अच्छे आदमी हैं, आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, आप समाज सुधार रहे हैं, आदि। मुझे इन बातों से अब राई के दाने जितना फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मुझे मालूम है कि मैं क्या कर रहा हूँ और मैं कैसा व्यक्ति हूँ| मुझे किसी के प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं ।

उसके बाद उस व्यक्ति ने अपने हाथ की फोटो भेजी| तो मैंने उससे कहा कि भैया मैं इस तरह हाथ नहीं देखता| यह तस्वीर भी अधूरी है और वैसे भी मैं रोज नहीं देखता| मेरे कुछ दिन निर्धारित हैं और मैं जितना हो सके नियम का पालन करता हूँ| अगर आपको एक सवाल ही पूछना है तो मैं निःशुल्क देख लूँगा और अगर एक सवाल से ज्यादा है तो आपको शुल्क देना पड़ेगा।

उसके बाद उस व्यक्ति ने कहा- मुझे सिर्फ एक रेखा के बारे में जानना है| मैंने देखा कि जिस रेखा के बारे में उसे जानना था, वह रेखा उसके हाथ में ह्रदय रेखा को छूती हुई शनि पर्वत की तरफ जा रही थी| उस व्यक्ति को लग रहा था कि वो ह्रदय रेखा को काट रही है, जबकि ऐसा नहीं था| उसने सिर्फ उसका फलादेश जानना चाहा तो मैंने कहा कि जिसके हाथ में शनि पर्वत की तरफ यह रेखा जाती है, वह आदमी सेल्फमेड होता है। उसने कहा कि सेल्फमेड होना कैसा है? अच्छा या बुरा ?

मैंने कहा- "सेल्फमेड होना कभी बुरा नहीं होता|" फिर उस व्यक्ति ने सरकारी नौकरी कब लगेगी? वाला सवाल किया| होने को उसके दो सवाल हो चुके थे और आज के दिन मैं देखता भी नहीं था, फिर भी मैंने उसे सरकारी नौकरी वाला आर्टिकल भेज दिया। उसके बाद उसने सारे मैसेज डिलीट कर दिए।

मैंने पूछा कि आपने मैसेज डिलीट क्यों किये ? तो उसका जवाब आया- "मैंने सोचा आप के फोन से लोड कम कर लूँ, इसलिए ज्ञान की बातें छोड़कर बाकी के मैसेज डिलीट कर दिए।" मैंने कहा मुझे लगता है कि आपकी कुंडली में चंद्रमा-राहु और शनि के बीच आपस में कुछ संबंध है।

उसने कहा- नहीं ऐसा नहीं है| मैंने कहा कुंडली भेजिए| ...तो उसकी जन्मकुंडली में राहु 9वीं दृष्टि से चंद्रमा को देख रहा था और नवमांश कुंडली में नीच राशि में बैठा शनि सीधे चन्द्रमा को देख रहा था और चंद्रमा सूर्य के साथ था।

निष्कर्ष :- राहु शातिर/ चालाक/ डिप्लोमेटिक/ कंजूस होता है, जो उस व्यक्ति की बातों और दो सवाल दिखाने की चालाकी से ही स्पष्ट था। शनि हमेशा गुप्त/ अकेला रहना चाहता है, जिस वजह से उस जातक ने मैसेज डिलीट किये| ये दोनों ग्रह व्यवहार पर तभी पूरी तरह से असर दिखायेंगे, जब ये चन्द्रमा यानी मन को देख रहे होंगे| इसलिए ये तीनों ग्रह जुड़े होंगे, ऐसा मुझे आभास हुआ और ईश्वरी कृपा हुई कि बात सही भी हो गयी। इस तरह के मीठा बोलने वाले, जरूरत से ज्यादा तारीफ करने वाले लोगों से मैं दूर रहना चाहता हूँ| इन लोगों के चक्कर में दूसरे लोगों का नुकसान होता है। इस सबको भूल जायें तो उच्च का गुरु होने के कारण उस व्यक्ति ने मुझे ये जानकारी साझा करने की इजाजत भी दी, जिसके लिए मैं उस व्यक्ति का आभारी रहूँगा।

केस स्टडी- 8

कई मेरे जानने वाले मुझसे अक्सर कहते हैं- "तुमने कभी बताया नहीं कि तुम कुंडली देखते हो?" मुझे इसमें बताने जैसा कुछ लगता ही नहीं| अभी भी मेरे मोहल्ले के तीन- चार लोगों को ही पता है कि मैं कुंडली देखता हूँ, जबकि मोहल्ले में 12- 13 परिवार होंगे लगभग| ये किस्सा इसी बताने, न बताने से जुड़ा है।

ग्रेजुएशन के वक़्त की बात है| एक मित्र किसी बड़े बाबा टाइप ज्योतिषी से मिलकर आया| बाबा जी ने उसे एक पन्ना लगभग दोगुने रेट लगाकर पहले ही पहना दिया था और फीस भी ठीक- ठाक ले ली थी, जिसे फीस न कहकर दक्षिणा कहा जाता है।

मेरा दोस्त बाबा जी की महिमा का गुणगान कर रहा था | मैं और मेरा तीसरा दोस्त आनन्द ले रहे थे| बातों- बातों में उसने बताया- “बाबा जी सिर्फ भूत, भविष्य, वर्तमान नहीं बताते| बाबा जी पिछले जन्म का भी बता देते हैं। मेरे लिए ये सुनना नई बात नहीं थी| लेकिन तीसरा दोस्त चौंक गया और बोला "गजब"| पहला दोस्त बोला- "हाँ! बाबा जी ने बताया कि मैं पिछले जन्म में एक राजा का सबसे प्रिय और वफादार घोड़ा था"। तीसरा दोस्त मंत्रमुग्ध सा हो गया बाबा जी की महिमा सुनकर।

थोड़ी बातचीत के बाद पहला दोस्त चला गया और तीसरा दोस्त जो ये बात जानता था कि मुझे थोड़ी बहुत ज्योतिष आती है, मुझसे बोला "क्या ये सच में पिछले जन्म में घोड़ा होगा"?

मैंने मन ही मन कहा- "पिछले जन्म का तो नहीं पता, इस जन्म में गधा जरूर है"।

नोट :- तीन चार बातें कहना चाहूँगा| पहली, ये 98% सही घटना है थोड़ा सा हास्य का पुट दिया है मैंने| दूसरी, कभी खुद को ज्ञानी दिखाने के चक्कर में किसी की आस्था का जाने- अनजाने मजाक ना उड़ायें| तीसरी, वर्तमान में रहिये| भविष्य/ भूत/ पिछले जन्म के बारे में सोचकर आप पल ही गवाएँगे और कुछ हासिल नहीं होगा| चौथी, बाबा जी सही भी हो सकते हैं, पाँचवे घर से पूर्वजन्म सम्बन्धी फलादेश किये जाते हैं।

केस स्टडी- 9

एक लड़का मुझे ह्वाट्सएप में बोल रहा था कि आप कुंडली देखना छोड़ दो| वजह? ...वजह कोई खास नहीं थी| कुछ दिन पहले उसका ब्रेकअप हुआ था| वह अभी भी उससे बाहर नहीं निकल पाया था और उसका सवाल था- “क्या प्रेमिका उसकी जिंदगी में वापस लौटेगी?” उसने सिर्फ जन्मकुंडली और चलित कुंडली भेजी थी, जिसे देखकर मैंने कहा था- “जरूर लौटेगी।“

मैंने उसकी बर्थ डिटेल माँगी| नवमांश देखा तो पाया कि इस प्रेम की वजह से उसे बहुत नुकसान हो सकता है| लगभग हर तरह से मैंने पूछा- “क्या इंटरकास्ट है प्रेम सम्बन्ध?” उसने कहा- "हाँ...|"

मैंने उसे छोटे भाई की तरह सलाह दी- "भूल जाओ, आगे बढ़ जाओ|" वो नहीं माना, बोला- आपने तो कहा था कि वापस लौटेगी।

मैंने कहा- “हाँ, वापस लौटेगी| मगर बेहतर यही है कि दोबारा इसमें न फँसो| थोड़ी बहस या दीवानगी वाली बातों के बाद वो लड़की की बर्थ डिटेल भेजकर बोला, इसकी कुंडली भी देख लो। मैंने कहा- "नहीं, इसका कोई फायदा नहीं|" उसने हद से ज्यादा जिद की तो मुझे वह कुंडली देखनी पड़ी| उसमें बहुत कुछ ऐसा था, जो उस जातक को भी नहीं बताया जा सकता था और वो लड़का चाहता था कि वो बातें मैं उसे बताऊँ।

मैंने उसे साफ- साफ शब्दों में कहा- "मैं दूसरों की कुंडली दूसरों को नहीं बताता और मेरे कुछ नियम हैं, जो सबके लिए बराबर हैं।" उसके बाद बात आई गयी हो गयी| सुबह उस लड़के का दोबारा मैसेज आता है- "आपने मुझे और ज्यादा परेशान कर दिया भइया| एक बात बोलूँ, बुरा मत मानना| आप कुंडली देखना छोड़ दो। "

मैंने भी पलटकर बोल दिया- "दूसरों की कुंडली दिखाकर उनके बारे में मत पूछो या उससे बोलो, मुझे फोन मैसेज करके बोल दे कि बता दो, मैं बता दूँगा ।" वो लड़का फिर से थोड़ी बहस या दीवानगी वाली बातें करने लगा। उसके बाद वो मुझे बोला- "आप ये कह रहे हो कि उसका कैरेक्टर सही नहीं है?"

मैंने कहा, मैं बस ये कह रहा हूँ "दूसरों की कुंडली दिखाकर उनके बारे में मत पूछो, बाकी मेरा वक़्त बर्बाद मत करो।"

वो तो अच्छा है, मैं कभी किसी से फीस के लिए नहीं कहता| एक से ज्यादा सवाल होने पर बोलता हूँ- “जो श्रद्धा हो, वो भेज देना| वरना इस तरह के लोग तो जिस लड़की से प्रेम करते हैं उसके लिए "आप ये कह रहे हो कि उसका कैरेक्टर सही नहीं है?" ऐसा सोच सकते हैं तो ज्योतिषी को किस हद तक बदनाम करेंगे? ये सोच से भी परे हैं।

हर 10- 15 कुंडली देखने के बाद, ऐसा व्यक्ति जरूर आता ही है जो खुद कम परेशान होता है किन्तु दूसरे को ज्यादा परेशान कर देता है। इस पूरे केस की सबसे अच्छी बात ये हुई कि मैंने उससे शुल्क दोगे या निःशुल्क दिखाओगे? पूछा जरूर, मगर छोटा भाई समझकर एक रुपया भी उससे लिया नहीं| ....और जब उसने सामने से भी बोला, तब भी मैंने दो बार मना कर दिया, वरना मेरे भी स्क्रीनशॉर्ट लग सकते थे कहीं| ख़ैर, जीवन में एक बात बड़ी गजब होती है सबके साथ| कभी- कभी हमें लगता है कि हम किसी की मदद कर रहे हैं और वही व्यक्ति हमारा फायदा उठाने लगता है।

केस स्टडी- 10

बहुत वर्ष पहले, फेसबुक के एक ग्रुप में त्रिकालदर्शी ज्योतिषी से मुलाकात हुई| पोस्ट में कमेंट के दौरान पता चला कि उनके पास अलग- अलग क्षेत्र से जुड़े हुए बहुत लोगों की कुंडली हैं| ....तो मैंने इनबॉक्स में जाकर उनसे गुजारिश किया कि अगर आप चाहे तो कुछ कुंडलियां मेरे साथ भी शेयर कर सकते हैं| मैं भी आपके साथ वो कुंडलियाँ शेयर कर दूँगा, जो मेरे पास हैं| उन्होंने मेरे प्रस्ताव को सुनते ही ठुकरा दिया|

इसके बाद कमेंटबॉक्स पर बातचीत होने लगी, किसी मुद्दे को लेकर| वो एक भोले मानस से भिड़ पड़े| मैं और कुछ अन्य लोग उस व्यक्ति का पक्ष लेने लगे| खुद को घिरता देख वो त्रिकालदर्शी ज्योतिषी बोले- "तुम वही हो न, जो मुझे कुंडलियाँ माँग रहे थे? मेरे मना कर देने पर अब तुम मुझसे बदला ले रहे हो?"

मैंने कहा- "ये आपकी गलतफहमी है| मैंने आपसे निवेदन किया था और बदले में अपने पास की कुंडलियाँ शेयर करूँगा, ये भी कहा था|" ....और फिर मैं उन्हें कमेंटबॉक्स में जवाब देने में व्यस्त हो गया|

मुझे लगता है सूर्य, बुध की तीसरे घर में युति होने के कारण मैं थोड़ा हाजिरजवाब भी हूँ, ...तो मैं उन पर भारी पड़ने लगा| एक वक़्त के बाद उनका सब्र जवाब दे गया और वो बोले- "बच्चे मेरे छठे घर (शत्रु घर) में राहु बैठा है, तुम मुझसे नहीं जीत पाओगे|" मैंने उनकी इस बात को नजर-अंदाज किया और उनकी दूसरी बातों का जवाब देता रहा| कुछ वक़्त बाद वो झुंझलाकर ऑफलाइन हो गए| मैंने उन्हें बताया नहीं कि मेरे छठे घर (शत्रु भाव) में मंगल बैठे हैं, जो जातक को अजातशत्रु बनाते हैं| मंगल के अलावा सूर्य भी छठे घर के लिए अच्छे माने जाते हैं| अब सवाल आता है कि मैंने उन्हें ये बात क्यों नहीं बताई, क्योंकि राहु शनि के साथ दूसरे भाव में बैठकर छठे भाव को देख रहे हैं| ...यानी शनि ने राहु को नियंत्रण में रखा हुआ है| मंगल जो तर्कशक्ति का ग्रह है, उसे राहु की दृष्टि की वजह से गोपनीयता का गुण भी मिल गया|

अगर पुनः इसको समझें तो राहु जो आठवे घर को देख रहा है, जो पराविद्याओं का घर भी होता है, उसकी वजह से मुझे लगा कि इनबॉक्स में जाकर उनसे बात करनी चाहिये| शनि के साथ राहु होने की वजह से मैंने उनसे मर्यादित शब्दों में बातचीत की| छठे मंगल की वजह से वो मुझसे तर्क- कुतर्क में नहीं जीत पाये और अंत में कमजोर राहु की वजह से उन्होंने अपना राज जल्दी बता दिया| इधर मजबूत राहु की वजह से मैंने उन्हें ये बात पता ही नहीं लगने दी| वैसे नवमांश कुंडली में भी मेरा राहु जो वर्गोत्तम है, वह बुध के साथ बैठा है और बुध भी वाणी और ज्योतिष का ही कारक होता है|

केस स्टडी 11

कुछ कुछ दिन पहले एक व्यक्ति का मुझे व्हाट्सएप पर मैसेज आया| वह अपनी कुंडली दिखाना चाहते थे| मैंने उन्हें कहा कि आप दोनों हाथों की तस्वीर, अपने हस्ताक्षर और बर्थ डिटेल मुझे भेज दीजिये, अपने सवालों के साथ| उनके हस्ताक्षर जब मैंने देखे तो उनके हस्ताक्षर आर्टिस्टिक हस्ताक्षर थे| जैसे किसी कलाकार के होते हैं, जैसे किसी बुद्धिजीवी के होते हैं, जैसे किसी कथावाचक या समाज को ज्ञान देने वाले व्यक्ति के होते हैं। उनके हस्ताक्षर देखते ही मैंने उनसे कहा कि आपके हस्ताक्षर दार्शनिकों/ बुद्धिजीवियों की तरह के हैं| क्या आप इस क्षेत्र में हैं? उन्होंने कहा- “नहीं मैं तो एक प्रशासनिक अधिकारी हूँ|”

उनकी बात बहुत चौंकाने वाली थी| उन्होंने कहा- “वैसे भी हस्ताक्षर तो समय- समय पर बदलते रहते हैं|” मैंने कहा आपकी बात ठीक है कि हस्ताक्षर बदलते रहते हैं, लेकिन शब्दों का फ्लो, रेखाओं पर दबाब उतना नहीं बदलता| ख़ैर, फिर मैंने उनकी कुंडली और हाथों को देखना बेहतर समझा| कुंडली देखने के बाद मैंने पाया कि उनके पास धार्मिक किताबें अच्छी खासी संख्या में होनी चाहिए, (जब भी कभी गुरु 12वें भाव, जिसे खर्चे का या व्यय स्थान भी कहते हैं, के साथ सम्बन्ध बनाते हैं तो व्यक्ति धार्मिक चीजों पर पैसे ज्यादा खर्च करता है)| जब मैंने इस बारे में तो सवाल किया तो उन्होंने कहा कि उनके पास काफी संख्या में धार्मिक किताबें हैं और वह अपने ऑफिस में आने वाले व्यक्तियों को भी गीता प्रेस की किताबें भेंट करते हैं| फिर उसके बाद मैंने कहा- “यह तो बहुत अच्छा काम है|”

कुंडली का काफी देर निरीक्षण करने के बाद मैंने उन्हें कहा कि आपकी कुंडली में ऐसी कोई समस्या तो नहीं है, लेकिन वैवाहिक जीवन में कुछ समस्याएं आ सकती हैं| उन्होंने कहा, ऐसी तो कोई बात नहीं है| मैंने कहा, ये तो और अच्छी बात है| अगर सम्भव हो तो आप अपनी धर्मपत्नी की कुंडली भी भेजियेगा| शोध के दृष्टिकोण से ये बहुत जरूरी होगी मेरे लिए, उपाय के तौर पर भी| मैंने उनसे कहा कि आप मंगल के उपाय कर सकते हैं, तो उन्होंने बताया कि पिछले लगभग एक साल से वह कर रहे हैं, दिन में दो बार| मैंने उनसे कहा, शायद हनुमान जी ने आपको मेरी परीक्षा देने के लिए भेजा है!

उन्होंने कहा- “नहीं- नहीं, मैं आपकी परीक्षा लेने नहीं आया| मैं तो बस अपने बारे में जानना आया हूँ |” मैंने कहा कि आप मेरी बात समझे नहीं| मैंने यह नहीं कहा कि आप मेरी परीक्षा लेने आये हैं| मैंने यह कहा कि भगवान ने आपको मेरी परीक्षा लेने ही भेजा है| प्लांट एस्ट्रोलॉजी से अंजान होते हुए भी उन्होंने आवास पर काफी वृक्ष लगाए हुए थे| ऐसा उन्होंने मुझे बताया| मेरी इस बात पर यकीन कीजिये कि उनकी दिनचर्या, उनका जीवन, प्रशासनिक अधिकारी होते हुए भी अध्यात्म के क्षेत्र में इतना असाधारण था, जितना आस- पास आसानी से देखने को नहीं मिलता।

कुछ देर बात होने पर उन्होंने ये भी बताया कि कुछ ज्योतिषियों ने उन्हें दो विवाह के योग बताये थे| मुझे हँसी आ गयी| मैं बोला- “मैंने आपको कहा ही था कि वैवाहिक जीवन में तालमेल की कमी रह सकती है| शायद यही ज्योतिषियों ने भी देखा होगा, बाकी आप चिंता मत कीजिये| दो विवाह जैसे कोई योग नहीं हैं मेरे हिसाब से|"

ज्योतिष के इतर उन्होंने कहा- "एकाधिक विवाह को खराब ही मान लेना भी एक दृष्टिकोण ही तो है|"

मैंने कहा- "देखिये खराब नहीं है, लेकिन जिस तरह का सामाजिक ताना- बाना हमारे देश का है, उस हिसाब से एक पक्ष को दिक्कतें आ ही जाती हैं ।

विदेशों में न्यूक्लियर फैमली होती हैं तो शायद इतना फर्क न ही पड़ता हो।"

उन्होंने कहा "आप सही कह रहे हैं, I am just joking.(मैं सिर्फ मज़ाक कर रहा था।)"

इस लम्बी बातचीत के बाद, लगभग अंत में उन्होंने मुझे बताया कि 28- 29 वर्ष की आयु में उन्होंने सोचा था कि वो संन्यास ले लेंगे। लेकिन फिर वह किन्ही कारणों से ले नहीं पाये, क्योंकि उन्हें पद और सम्मान ज्यादा आकर्षित नहीं करते।

तब मैंने फिर से हस्ताक्षर वाली बात दोहराई। मैंने कहा देखिए, मैंने आपको सबसे पहले यही बताया था।

इस तरह लगभग सभी बातें थोड़ी बहुत ठीक ही रहीं। शायद नये व्यक्ति के सामने एकदम खुलना उनके स्वभाव में नहीं था। इसका कारण भी उनके सातवें भाव में लग्न को देखता राहु का होना हो सकता है। ....क्योंकि हम सब जानते हैं कि राहु सामने से अपने बारे में नहीं बताता या उतना ही बताता है जितना जरूरत हो। ....लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रशासनिक अधिकारी के वेश में होते हुए भी वो दार्शनिक सोच वाले ही व्यक्ति थे। ऐसे व्यक्तियों से मिल पाना, बात कर पाना, बिना दैवीय कृपा के नहीं हो सकता।

ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता, अगर आप.....

कुछ लोग ज्योतिषी के पास जादू की उम्मीद लेकर आते हैं| उनकी महत्वाकांक्षाएं उन पर इतनी हावी होती हैं कि वह सच और कल्पना के बीच में जो तर्क की दीवार होती है, उसको पहले ही गिरा चुके होते हैं| ऐसे ही लोगों का ज्योतिषी फायदा भी उठाते हैं और यही लोग बाद में पछताते हैं।

जिस तरह एक साइकिल ठीक करने वाला साइकिल के टायर दुरुस्त कर सकता है, साइकिल में घण्टी, शीशा, स्टैंड आदि लगा सकता है, पर साइकिल चलाने वाले को रेस नहीं जितवा सकता, ठीक उसी तरह ज्योतिषी सिर्फ आपको रास्ता दिखा सकते हैं, प्रयास आपको खुद करने होंगे।

अगर आप नौकरी के लिए इंटरव्यू नहीं दे रहे हैं, खुद से प्रयास नहीं कर रहे हैं, तो ज्योतिषी आपकी नौकरी नहीं लगा सकता है| अगर आप विवाह करने के इच्छुक हैं मगर आपकी जीवनसाथी को लेकर "टॉल, डार्क, हैंडसम" या "स्लीम, फेयर, इंटेलिजेंट" वाली फरमाइशें हैं तो इस मामले में भी कोई ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता| कुल मिलाकर ये कह सकते हैं कि आप जो भी हासिल करना चाहते हैं, अगर आपने उस दिशा में अपनी तरफ से प्रयास नहीं किये हैं तो आपकी मदद ज्योतिषी तो क्या कोई भी नहीं कर सकता| किसी भी चीज को पाने की पहली शर्त स्वयं उसके काबिल बनना है| अगर आप उस चीज के काबिल नहीं होंगे, तो मिलने के बाद भी उसे सम्भाल नहीं पायेंगे।

देश, काल, परिस्थिति को समझना भी हमेशा एक महत्वपूर्ण बिंदु होता है| मान लीजिए एक सरकारी पोस्ट की सिर्फ 12 ही वैकेंसी आयी हैं और उस पर 12 लाख लोगों ने अप्लाई किया है अथवा किसी कोर्स में दाखिले के लिए परीक्षा है, जिसकी सिर्फ 70 सीटें हैं और उस पर 7 हजार बच्चों ने फॉर्म भरा है, तो यहाँ "ज्योतिषीय योग" से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण "कर्म योग" है।

इसके संग- संग अगर आपको कोई अतिरिक्त लाभ यानी किसी भी तरह का कोई आरक्षण नहीं मिल रहा है, न ही आपकी बड़े अधिकारियों तक सीधी पहुँच है, तो भी आपकी काबिलियत धरी की धरी रह सकती है| क्योंकि कई बार इंटरव्यू करवाया ही तब जाता है, जब लोग रख लिए जाते हैं।

आप बहुत शानदार लिखते हैं, बहुत शानदार गाते हैं, बहुत शानदार चित्र बनाते हैं, बहुत शानदार विचार रखते हैं, बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं, लेकिन जब तक पुरुषार्थ करके दुनिया के सामने आप अपनी प्रतिभा को नहीं लेकर आयेंगे, आपको कोई नहीं पहचानेगा| शायद आपके पड़ोसी भी नहीं।

ज्योतिषी को जादूगर मत समझिये| ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता, अगर आप अपनी मदद स्वयं नहीं करेंगे|

ज्योतिषीय यात्रा एवं कुछ सूत्र

मैं जीवन में बहुत से ऐसे ज्योतिषियों से मिला हूँ और मिलता रहता हूँ, जिनसे कुछ पूछो या बोलो कि थोड़ा सिखा दो| ....तो या तो वो इंकार कर देते हैं या कोई बहाना बना देते हैं| एक हस्तरेखा के जानकार व्यक्ति ने तो लगभग तीन- चार महीने मेरा वक़्त भी बर्बाद किया और अपना भी, जबकि वो चाहते तो पहले ही इंकार कर सकते थे| फिर अंत में मैंने उम्मीद ही छोड़ दी और उन्हें फोन/ मैसेज न करने का निर्णय किया| मुझे लगा, वह किसी जटिल परेशानी से जूझ रहे हैं| मैंने भगवान से उनके लिये दुआ की और मैं आगे बढ़ गया।

***

इसलिए मेरी पूरी कोशिश रहती हैं कि कोई व्यक्ति अगर ज्योतिष सीखने या इससे जुड़े सवालों के साथ मुझे मिले तो मैं उसे निराश न करूँ| अपने सामर्थ्य के हिसाब से उसके हर सवाल का उसे विस्तार से समझाते हुए जवाब दूँ। कई बार ये तक होता है कि बातचीत में कई नई बातें सीखने को मिलती हैं, जिससे खुद के भी ज्ञान में वृद्धि होती हैं| क्योंकि हर किसी के पास साझा करने को कुछ न कुछ होता ही है।

***

कई बार कुंडली देखते ही पता लग जाता है कि जातक के जीवन में क्या समस्या चल रही होगी? मगर मैं कभी अपने मुँह से कुछ गलत नहीं बोलना चाहता| इस चक्कर में, मैं बोलता नहीं और त्रिकालदर्शी ज्योतिषी बनने से चूक जाता हूँ।

***

कुंडली या हाथ देखते वक़्त कभी- कभी कमाल होता है| मैं जब सामने वाले किसी जातक को बोलता हूँ- "एक सवाल निःशुल्क देख लूँगा, उसके बाद शुल्क देना पड़ेगा"। तो कुछ लोग कहते हैं- "आजकल तो बहुत बुरा हाल है| एक रुपया भी नहीं है मेरे पास|... आप एक सवाल ही देख लीजिये|"

मैं मुस्कुराकर कहता हूँ- "कोई बात नहीं, सवाल भेज दीजियेगा"। यकीन मानिये, शोध की दृष्टि से ऐसे लोगों की कुंडली/ हाथ देखने का मैं कोई मौका नहीं छोड़ना चाहता| क्योंकि जो व्यक्ति एंड्रॉयड फोन में नेट पैक डलवाकर मैसेज कर रहा है और उसके पास एक रुपया भी नहीं(?) उसकी कुंडली कितनी रोचक होगी? सोचकर देखिये।

ज्योतिष में कितना निखार आयेगा? ये बात पूरी तरह शोध पर निर्भर करती है| जितना हो सके, कुंडलियाँ/ हाथ देखिये| ज्योतिष के खोजी विद्यार्थी के लिए तो जातक की कुंडली ही उसका शुल्क है, जो जातक दे चुका है| बाकी सब तो बोनस है ।

***

कई बार फलादेश करवाने के लिए ऐसे जातक आ जाते हैं, जिनकी कुंडली/ हस्तरेखाएँ काफी हद तक मुझसे मिलती जुलती होती हैं। ऐसी स्थिति में, मैं उन्हें जटिलतम उपाय बताता हूँ| वो उपाय जो उपाय नहीं हैं, बल्कि आदर्श दिनचर्या का हिस्सा हैं| लेकिन इस भौतिकवादी युग में उसे जी पाना थोड़ा मुश्किल सा होता है| लेकिन मुझे ताज्जुब तब होता है, जब वो लोग बिना ना- नुकुर के वो उपाय कर भी लेते हैं।

***

जब से मैंने अपने मित्र की सलाह पर "एक व्यक्ति, एक सवाल" निःशुल्क, उसके बाद शुल्क वाला नियम बनाया, तब से मेरी जिंदगी तो आसान हुई ही, हुई जातकों की परेशानियाँ भी लगभग खत्म हो गयी|

***

अमावस्या को चन्द्रमा को मजबूत करने के लिए एक पान जरूर खाना चाहिए।

***

कई ज्योतिषी मित्र बताते हैं कि उन्हें बड़े बड़े राजनेता, वकील, जज, ब्यूरोकेट्स, बिजनेसमैन अपनी कुंडली दिखाते हैं और मेरे केस में ऐसा है कि मैं सामने वाले से ज्यादातर मामलों में पूछता ही नहीं कि वो क्या करते हैं? हाँ, अगर उनका सवाल ही प्रोफेशन से जुड़ा हुआ हो तो अलग बात है ।

***

पूर्णिमा के दिन मानसिक और आर्थिक तकलीफों का सामना कर रहे जातकों को, पास के किसी शिव मंदिर में जाकर शिव आराधना और रुद्राभिषेक करना चाहिये| अगर सम्भव हो तो उपवास भी रख सकते हैं।

***

फेसबुकिया :- क्या मैं अपना हाथ भेज सकता हूँ, आप देखेंगे ?

- “नहीं, हाथ की तस्वीर भेजिये| वैसे आपका बुध कमजोर है, उसके उपाय कर लीजिये।“

***

सूर्य को देखकर त्राटक (ध्यान) करने से जातक का शौर्य और चन्द्रमा को देखकर त्राटक करने से धैर्य बढ़ता है।

***

"प्लांट एस्ट्रोलॉजी" के द्वारा सिर्फ पानी में जड़ी- बूटी डालकर बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान हो सकता है| मैं इसलिए नहीं बताता कि सामने वाला कहीं नहाना ही न छोड़ दे, क्योंकि बताये गए उपाय भी हर कोई नहीं करता।

***

सिर्फ तीन तरह के ही व्यक्ति होते हैं- तामसी, राजसी और सात्विक। तामसी कहता है सब मेरा, राजसी कहता है सब तेरा, सात्विक कहता है सब उसका।

नोट: सारा का सारा ज्योतिष इसी के इर्द- गिर्द घूमता है।

***

राहु हो, केतु हो या शनि, या कोई और| किसी ग्रह से बचकर नहीं, बल्कि उनके साथ चलकर आपका उद्धार होगा।

***

कुछ लोग बोलते हैं, फलाने व्यक्ति की तो अचानक किस्मत बदल गयी| ऐसा कहने वाले लोग बेवकूफ होते हैं| जीवन का वही पहलू देखते हैं, जो दिख रहा होता है। ज्योतिष में अचानक वाला विभाग "राहु" के पास है और राहु गुप्त तरीके से योजना बनाता और कार्य करता है। अचानक जैसा कुछ नहीं होता| मेरा अपना मत ये है कि जो चीजें

योजनाबद्ध तरीके से हमारे पीठ पीछे चल रही होती हैं या हमें पता नहीं होती और कभी एकाएक सामने आ जाती है, उन्हें हम अपना मन बहलाने के लिए "अचानक" कह देते हैं| जबकि सच तो ये है पत्ता तक अचानक नहीं हिलता।

***

ग्रहों का काम है जिंदगी की राह में मुश्किलें खड़ी करके हमें परेशान करना, हमारा काम है तिनका भर भी विचलित न होकर उन्हें परेशान करना| बस यही युद्ध चलता रहता है, स्वयं का स्वयं के साथ ।

***

अगर आप एक घण्टा पहले उठना और दो घण्टा पहले से सोना शुरू कर देंगे, तो आपकी ज्यादातर परेशानियाँ खत्म हो जायेंगी।

***

अगर आप ज्योतिष सीखना चाहते हैं तो कुंडलियाँ देखिये| इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है ज्योतिष सीखने का।

***

ज्योतिषी को वही उपाय बताने चाहिये जिससे जातक को फायदा हो, न कि ज्योतिषी को। पुखराज पहनना ही बृहस्पति का उपाय नहीं| आप हल्दी की गाँठ बाजू में बाँधकर, ताबीज की तरह गले में पहनकर या पीला कपड़ा साथ रखकर भी बृहस्पति को प्रसन्न कर सकते हैं।

***

शनि उन्हीं को परेशान करता है, जो दूसरों को परेशान करते हैं।

हमें भी ज्योतिष सीखनी है क्या करें ?

"हमें भी ज्योतिष सीखनी है क्या करें ?" इस सवाल के साथ कई लोग आते हैं। मुझे बहुत खुशी भी होती है कि लोग ज्योतिष सीखना चाहते हैं। फिर भी मुझे लगता है सबसे पहले लोगों को खुद से सवाल करना चाहिए कि वो ज्योतिष क्यों सीखना चाहते हैं ? अगर दूसरों की भलाई के अलावा उनका कोई और उद्देश्य है तो उन्हें ज्योतिष नहीं सीखनी चाहिए। देखिये आप ज्योतिष सीखेंगे, किसी की मुश्किल हल कर देंगे, किसी को रास्ता दिखा देंगे तो मान-सम्मान और पैसा आपको खुद ब खुद मिलने लगेगा। लेकिन अगर आप ये सोचकर ज्योतिष सीखना चाह रहे हैं कि ज्योतिष सीखकर आप खूब पैसा कमायेंगे तो यकीन मानिए बेशक कमायेंगे समाज में आपको मान-सम्मान भी मिलेगा, लेकिन ये भी याद रखियेगा सब कुछ लौटकर वापस आता है और दुआ से ज्यादा ताकत बद्दुआ में होती है।

नए लोगों को मेरी सलाह है कि खुद को महान साबित करने के चक्कर में किसी के बारे में कोई बुरी भविष्यवाणी ना करें या जितना हो सके बचने की कोशिश करें, अगर आपको किसी की कुंडली में कुछ बुरा होता हुआ साफ-साफ भी नजर आ रहा है तो भी कोशिश करें की आपकी बात ऐसी हो कि उसे सुनकर वो अभी से उदास ना हो, अवसाद में ना आ जाये। क्योंकि जातक सब जगह से हार कर ही ज्योतिषी के द्वार तक पहुँचता है इसलिए आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है, कई बार जन्मकुंडली में दिखने वाली बुरी युति नवमांश या दूसरी कुंडलियों में ग्रहों की स्थिति बदलने के कारण अच्छा फल दे देती है। तो जब भी कुंडली देखें तो कोशिश करें कि जातक आपसे मिलकर सकारात्मक महसूस करे।

ज्योतिष पराविद्याओं के अंतर्गत आती है तो जितना हो सके इसके व्यवसायीकरण से बचें, हर बार जातक को उपाय में नग ना बतायें पुखराज की जगह हल्दी की गांठ या माणिक जी जगह पर तांबे का कड़ा या सूर्य को जल चढ़ायें ऐसा बताने से परहेज ना करें। हमेशा उसे ऐसे उपाय बतायें जिससे उसे ज्यादा फायदा हो ना कि आपको। ये बात ठीक है आप किसी को अपना समय दे रहे हैं तो उसका शुल्क लेना चाहिए लेकिन ये भी उतना ही सत्य है ज्योतिष की किसी भी किताब में शुल्क का जिक्र नहीं है दक्षिणा का जिक्र जरूर और ये जातक की इच्छा पर निर्भर करता है। कुछ लोगों ने भरम फैलाया है कि निःशुल्क में कुंडली देखने या दिखवाने से गुरु कमजोर होता है मुझे ये बात मनगढ़ंत लगती है। इसकी दो वजहें हैं पहली ज्ञान तो बाँटने से बढ़ता है, तो गुरु कैसे कमजोर हो जायेगा। दूसरी अगर कोई व्यक्ति आपको कुंडली दिखवाता है और अगर किसी मजबूरी के चलते आपको पैसें नहीं भी देता तो दुआ तो जरूर देगा। यकीन मानिए पैसा कुछ दिन हफ्ते में खर्च हो जाता है लेकिन दुआ तब काम आती है जब सारे रास्ते बंद हो जाते हैं।

वैसे ज्योतिषियों को भी धूर्त लोगों से बचना चाहिए। धूर्त यानी वही लोग जो ज्योतिषियों को शुल्क नहीं देना चाहते। ये लोग नाई की दुकान में जाकर बाल फ्री में काटने को नहीं बोलते, लेकिन महँगे एंड्रॉयड फोन में फेसबुक इन्सटॉल करके उसमें नेट पैक डलवाकर ज्योतिषी से उम्मीद करते हैं कि वो कुंडली निःशुल्क देखे। इसके साथ-साथ ज्योतिष सीख रहे लोगों को इस बात का ध्यान भी रखना चाहिये जितना हो सके खुद से ज्योतिष सीखने की कोशिश करें। क्योंकि कोई भी व्यक्ति आपको ज्योतिष नहीं सिखा सकता, लेकिन सिखाने के नाम पर अच्छी खासी फीस जरूर ले सकता है।

नास्तिकों से बहस में ना पड़ें। बहस में पड़कर सिर्फ समय और ऊर्जा नष्ट होती है और कुछ हासिल नहीं होता। जो व्यक्ति ज्योतिष का मजाक उड़ाता है, इसे पाखंड कहता है, बहुत से मामलों में मैंने पाया है उसकी खुद की कुंडली में गुरु और चन्द्र शत्रु राशि, नीच राशि या पाप ग्रह से दृष्ट होते हैं। यानी उसकी खुद की प्रकृति भी उसके ग्रहों पर निर्भर करती है।

गीता प्रेस का "ज्योतिषतत्वांग" और रंजन पब्लिकेशन की "फलित सूत्र" ज्योतिष यात्रा शुरू करने के लिए बेहद उपयोगी किताबें हैं, लेकिन ज्योतिष किताबों के साथ-साथ आपके नियमित अभ्यास और आपके सात्विक जीवन पर

भी निर्भर करता है। आप जितनी कुंडलियाँ देखते जायेंगे, आप उतनी ज्योतिष सीखते जायेंगे और जितना आपका जीवन सात्विक होता जायेगा, उतने आपके फलादेश सत्य होते जायेंगे।

(इति सिद्धम)

यह पुस्तक आपको कैसी लगी? अपने सुझावों, शिकायतों आदि से हमें अवगत कराना न भूलें|

आपका – विपुल जोशी

संपर्क - +91 95285 61144